कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवशक्ति बक्सी

संपादक मंडल

सत्यपाल
संजीव कुमार सिन्हा

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDI : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

बाल आपटे स्मृति

श्रद्धांजलि सभा..... 7

बाल आपटे : संगठन साधक
संजीव कुमार सिन्हा..... 9

युवाओं के मार्गदर्शक बाल आपटे नहीं रहे
ओमप्रकाश कोहली..... 11

वे सदैव सिद्धांतनिष्ठ व सांगठनिक मूल्यों के आग्रही रहे
राजकुमार भाटिया..... 12

मध्यप्रदेश : अटल किसान महापंचायत..... 14

लेख

उत्कृष्ट अमेरिकी इतिहासकार ने भारत पर ब्रिटिश शासन को सबसे बड़ा अपराध बताया
–लालकृष्ण आडवाणी..... 17

राष्ट्रीय पार्टियों का महत्व कम नहीं होगा
–अरुण जेटली..... 20

साक्षात्कार

धर्मेन्द्र प्रधान, राष्ट्रीय महामंत्री, भाजपा..... 22

अन्य

मध्य प्रदेश : 49 निकायों में से 36 में भाजपा की शानदार जीत..... 24

हिमाचल प्रदेश कार्यकारिणी बैठक..... 25

गुजरात : अभिनव पहल..... 27

प्रादेशिक

हिमाचल प्रदेश, दिल्ली..... 28

जम्मू–कश्मीर, बिहार, झारखण्ड..... 29

ऐतिहासिक चित्र

जनसंघ में प्रतिनियुक्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारकगण

बोध कथा

कथनी और करनी में समानता

किसी भी सामाजिक काम में कार्यकर्ता की भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है। यदि उसकी कथनी और करनी एक नहीं होगी, तो कोई उस पर विश्वास नहीं करेगा और उसे कभी सफलता भी नहीं मिलेगी। इस बारे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी एक कहानी सुनाते थे।

एक बच्चे को गुड़ खाने की बहुत आदत थी। इस कारण बार-बार वह बीमार हो जाता था। ऐसी ही बीमारी के समय उसके पिता ने एक चिकित्सक को बुलाया। चिकित्सक ने उसे देखकर एक सप्ताह की दवा तो दी; पर गुड़ खाने को मना नहीं किया। अगली बार उन्होंने फिर एक सप्ताह की दवा दी; पर गुड़ खाने को अब भी मना नहीं किया। तीसरी बार उन्होंने दवा देते समय गुड़ की हानियाँ बतायीं। यह सुनकर बालक ने गुड़ खाना बहुत कम कर दिया।

बालक के पिता ने कहा - यदि यह बात आप पहली बार में ही कह देते, तो आपका क्या बिगड़ जाता? चिकित्सक ने कहा - असल में मैं स्वयं भी बहुत अधिक गुड़ खाता था। इसलिए मेरा कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। पर अब मैंने गुड़ खाना छोड़ दिया है। इसलिए आज यह बात कही है।

स्पष्ट है कि जो काम हम स्वयं नहीं करते, उसे करने के लिए दूसरों को किस मुँह से कह सकते हैं?

अच्छा कार्यकर्ता वही है, जिसकी कथनी और करनी एक समान हो।

व्यंग्य चित्र

इनका कहना है...

''कांग्रेस ने सदा ही मुस्लिमों को मात्र एक वोट-बैंक माना है और उन्हें ऑटोमोबाइल गैराज, कबाड़ी या कसाई की दुकानें मुहैया कराने के अलावा कुछ नहीं किया। हम इस स्थिति को एकदम बदल देना चाहते हैं और राष्ट्रीय विकास में सभी समुदायों का बराबर का भागीदार बनाना चाहते हैं।''

- **नितिन गडकरी,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

''जम्मू-कश्मीर पर वार्ताकारों की रिपोर्ट में पाक कब्जे वाले कश्मीर को 'पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर' की जगह 'पाक प्रशासन वाले कश्मीर' कहा गया है। जैसा कि पड़ोसी देश के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ कहा करते थे।''

- **सुषमा स्वराज,** नेता प्रतिपक्ष, लोकसभा

''केन्द्र सरकार में प्रधानमंत्री का नेतृत्व प्रेरणाहीन दिखाई पड़ता है। अर्थव्यवस्था का कुप्रबंधन यूपीए-II सरकार की सबसे बड़ी विफलता है, इसमें भ्रष्टाचार सम्बंधी घोटालों को जोड़ दिया जाए तो यूपीए की विश्वसनीयता खत्म हो जाती है।''

-**अरुण जेटली,** नेता प्रतिपक्ष, राज्यसभा

सम्पादकीय

वे समाधान थे...!

çk- बाल आपटे नहीं रहे। वे चिंतक और समाजसेवी के साथ-साथ शिक्षाविद् भी थे। वे राज्यसभा में 12 वर्ष तक रहे और शिक्षा के हर मसले पर उन्होंने अपने विचार रखे। उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् और भाजपा को मजबूत बनाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। नीति, सिद्धांत और स्पष्टता से अपनी बात रखने में वे कभी पीछे नहीं रहे। वे कार्यकर्ताओं के संरक्षक थे। कार्यकर्ताओं की चिंता उन्हें सदैव चिंतित कर देती थी।

प्रा. बाल आपटे अनावश्यक चर्चा करते नहीं थे और आवश्यक चर्चा छोड़ते नहीं थे। वे वकील होने के नाते सार्थक और समर्थ बहस करते थे। वे विचार परिवार के एक शीर्ष कार्यकर्ता थे। विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ता के रूप में चाहे वेंकैया नायडू हो, राजनाथ सिंह, अरुण जेटली, सुशील मोदी, अनंत कुमार हों या नरेन्द्र मोदी- अनगिनत कार्यकर्ताओं को उनका मार्गदर्शन मिला। वे नपे-तुले शब्दों में अपनी बात रखते थे। वे अनुशासित थे।

प्रा. बाल आपटे नई पीढ़ी को आगे लाने और नई पौध लगाने में जहां विश्वास करते थे, वहीं वे प्रतिबद्धता को संगठन में प्रमुखता देते थे। वे व्यवस्था प्रेमी थे। वे चाहते तो तीसरी बार भी राज्यसभा के सदस्य बन जाते, पर उन्होंने नए लोगों को मौका देने का आग्रह किया। उनका कहना था कि जो व्यक्ति परिस्थितियों का आकलन नहीं करता वह समय के साथ नहीं चल पाता है। वे कर्मकांडी तो नहीं थे, पर ईश्वर के आराधक थे। 'कर्म ही पूजा' के प्रार्थी थे। वे परिचय को चिरायु रखने में विश्वास रखते थे। वे सुनते थे, पर अनावश्यक नहीं।

प्रा. बाल आपटे नींव की चिंता करते थे। संघ व्यवस्था में 'प्रचारक' की इच्छा ही उनके लिए काफी होता था। वे अपने प्रचारकों से कभी जिरह-बहस नहीं करते थे। वे मानवीय गलतियों को स्वत: अनदेखी कर उस व्यक्ति में सुधार करने में विश्वास करते थे।

उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन में कभी निजता को महत्व नहीं दिया। वे रूढ़िवादी नहीं थे, पर

मध्यप्रदेश भाजपा ने इतिहास रचा

मध्यप्रदेश के समाचार पत्रों ने लिखा कि 16 जुलाई को भोपाल के जम्बूरी मैदान में भाजपा मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित 'अटल किसान महापंचायत' ने इतिहास रचा। उन्होंने अपनी टिप्पणियों में लिखा कि मध्यप्रदेश की राजनीति में इतनी बड़ी किसान रैली कभी नहीं देखी गई। सच में वह महापंचायत नहीं महाकुंभ था। दूर-दराज से आए सिर पर साफा बांधे और अपने-अपने घर से ही शाम का 'कलावा' लेकर पहुंचे लाखों किसान अपने लाडले नेता 'शिवराज सिंह चौहान' को देखने के लिए आतुर थे। किसानों ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह पर अटूट विश्वास दिखाया। मध्यप्रदेश भाजपा के आह्वान पर पूरे देश से किसान भाई भोपाल न केवल अपने चहेते नेता शिवराज सिंह चौहान का अभिनंदन करने आए थे बल्कि वे केन्द्र की कांग्रेस सरकार के खिलाफ संघर्ष का शंखनाद भी करने आए थे। वे कह रहे थे '0' प्रतिशत ब्याज पर कर्ज देने की घोषणा ही उसका क्रियान्वयन करने का फैसला कर प्रदेश के मुख्यमंत्री चौहान ने किसानों का दिल जीत लिया। किसानों के मन में यह बात घर कर गई है कि भाजपा शासित मध्यप्रदेश किसानों की हमदर्द सरकार है।

मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार के मुखिया शिवराज सिंह चौहान के मन में यह बात है कि जब भारत कृषि प्रधान देश है और कृषि हमारी आर्थिक व्यवस्था का आधार है तो फिर इतने वर्षों से कांग्रेस केन्द्र की सत्ता में रहते हुए कृषि और कृषकों की खुशहाली के कदम क्यों नहीं उठाए? आज किसानों की माली हालत भारत में बदतर क्यों है। किसानों द्वारा आत्महत्याएं क्यों की जा रही है? इन सवालों का उत्तर देते हुए शिवराज सिंह चौहान ने खेती को फायदे का धंधा बनाने

परम्पराओं और मानवता को कोई तोड़े, वह उन्हें बर्दाश्त नहीं था। वे न कभी सत्ता से प्रभावित हुए और न कभी आपातकाल में घबराए। आपातकाल को उन्होंने लोकतंत्र की आवश्यकता के कारण हिम्मतपूर्वक झेला। वे विषय पर पकड़ रखते थे। संगठन शास्त्र के ज्ञानी थे। वे कार्यकर्ताओं को तराशते हुए उसे आगे लाने में विश्वास रखते थे।

प्रा. बाल आपटे ने गत पचास वर्षों में निष्कलंक जीवन जीया। वे राजनीति में रहते हुए कभी कालिख के करीब नहीं गए। उनसे प्रेरणा मिलती थी। वे गृहस्थ जीवन में कार्यरत कार्यकर्ताओं को अपने पैरों पर कार्य करते हुए संगठन कार्य करने की प्रेरणा देते थे।

प्रा. बाल आपटे का व्यक्तित्व अखिल भारतीय था। वे राजनीति में सब कुछ प्राप्त करने की मंशा नहीं रखते थे, पर 'विचारधारा' के विस्तार में वे कितने सहायक हो सके वे उसकी चिंता अवश्य करते थे। वे संघ परिवार में समस्या नहीं, समाधान थे। संगठन में आज सर्वाधिक आवश्यकता ऐसे ही व्यक्तित्व की है, जो समस्या नहीं समाधान रहे। प्रा. बाल आपटे के निधन से हमने एक चिंतक, शिक्षाविद् और सिद्धांतनिष्ठ कार्यकर्ता खो दिया। हम उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।■

के लिए मध्यप्रदेश में एक नहीं अनेक फैसले किए। श्री चौहान का कहना है कि भारत की नीति-निर्धारण में किसानों को मध्य में यानि केन्द्रबिन्दू में रखना होगा।

श्री चौहान की स्पष्ट मान्यता है कि भारत का किसान और उसकी खेती जब तक नहीं लहलहायेगी तब तक भारत का भी सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। इस महाकुंभ में जहां भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी, लोकसभा में प्रतिपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज, पूर्व भाजपा अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह और मध्यप्रदेश भाजपा प्रभारी अनंत कुमार पहुंचे थे, वहीं पूरे मध्यप्रदेश के भाजपा नेता, किसान मोर्चा के राष्ट्रीय और प्रांतीय नेताओं की भी गरिमामय उपस्थिति थी।

इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी ने दो टूक शब्दों में भाजपा मध्यप्रदेश के संगठन और सरकार की खुले रूप से सराहना की वहीं किसानों के इस महाकुंभ में उन्होंने घोषणा कर दी जब केन्द्र में एनडीए का शासन आएगा तो हम किसानों को शून्य ब्याज पर कर्ज देंगे। उनकी इस घोषणा से लाखों किसानों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। वहीं केन्द्रीय नेताओं ने खाद के बढ़ते मूल्य पर गहरी चिंता ही नहीं व्यक्त की बल्कि उन्होंने इसके लिए अखिल भारतीय आंदोलन की रूपरेखा बनाने की घोषणा भी की।

'भोपाल' की धरती किसानों से पट पड़ी थी। 16 जुलाई को किसानों ने अपनी राजधानी को जहां हरियाली दी वहीं यह भी संदेश दिया कि सन् 2013 में भाजपा पुनः तीसरी बार शिवराज सिंह के नेतृत्व में सरकार बनायेगी। ■

प्रणव मुखर्जी बने देश के 13वें राष्ट्रपति

श्री प्रणव मुखर्जी 22 जुलाई 2012 को देश के 13 वें राष्ट्रपति चुने गए। श्री मुखर्जी ने अपने प्रतिद्वंद्वी श्री पी.ए. संगमा को पराजित किया। विदित हो कि श्री संगमा को भाजपा, एआईएडीएमके तथा बीजू जनता दल सहित कुछ अन्य दलों का समर्थन प्राप्त था जबकि श्री मुखर्जी को संप्रग के घटक दलों के अलावा राजग के घटक दलों जदयू और शिव सेना का भी समर्थन मिला।

राज्यसभा के महासचिव एवं राष्ट्रपति चुनाव के निर्वाचन अधिकारी श्री वीके अग्निहोत्री ने प्रणव मुखर्जी के देश का अगला राष्ट्रपति चुने जाने की विधिवत् घोषणा की। गत 19 जुलाई को हुए राष्ट्रपति चुनाव में 776 सांसदों में से 748 ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया जिसमें से प्रणब को 527 और संगमा को 206 सांसदों ने मत दिया।

जसवंत सिंह राजग के उपराष्ट्रपति उम्मीदवार

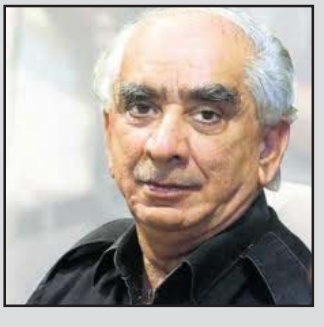

भाजपा के नेतृत्व वाले राजग ने 16 जुलाई 2012 को सर्वसम्मति से भाजपा नेता श्री जसवंत सिंह को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया। वह संप्रग उम्मीदवार श्री हामिद अंसारी के मुकाबले चुनाव लड़ेंगे। राजग की बैठक के बाद इसके कार्यकारी अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने घोषणा की कि श्री जसवंत सिंह को उप राष्ट्रपति पद के लिए सर्वसम्मति से उम्मीदवार चुना गया है। श्री सिंह दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) से भाजपा सांसद हैं। ■

वे सिद्धांतों के प्रति कटिबद्ध थे

– सुषमा स्वराज, नेता प्रतिपक्ष लोकसभा

राष्ट्रवादी चिंतक व भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बाल आपटे की स्मृति में 18 जुलाई 2012 को नई दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उन्हें याद करने के साथ उनके बताए मार्ग पर चलने के संकल्प लिए गए।

इस अवसर पर लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने श्री बाल आपटे के निधन को अपूरणीय क्षति बताते हुए कहा कि उनका जीवन आदर्श था। वे सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध थे तो निष्ठाओं के प्रति कटिबद्ध। उनका आदर्श जीवन हमारे लिए अनुकरणीय बने, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने स्व. आपटे को दूरदृष्टि का धनी व्यक्तित्व बताते हुए कहा कि उनका जीवन राष्ट्रवादी विचारधारा से ओत-प्रोत था। वे निरंतर ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाते रहे। उनका अभाव हमें खटकता रहेगा।

इस कार्यक्रम में दिल्ली विधानसभा में विपक्ष के नेता प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा, भाजपा मुख्यालय प्रभारी प्रो. ओमप्रकाश कोहली, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती किरण घई, राष्ट्रीय सचिव सुश्री वाणी त्रिपाठी व श्रीमती आरती मेहरा सहित कई राष्ट्रवादी संस्थाओं के प्रतिनिधिगण उपस्थित थे। भाजपा के राष्ट्रीय सचिव श्री मुरलीधर राव ने इस कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने स्व. बाल आपटे के चित्र पर पुष्प अर्पित कर नम आंखों के साथ उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

हम यहां श्रीमती सुषमा स्वराज एवं डॉ. मुरली मनोहर जोशी द्वारा इस श्रद्धांजलि कार्यक्रम में दिए गए शब्दांजलि का संपादित पाठ प्रकाशित कर रहे हैं:

मैंने कभी कल्पना नहीं की थी कि इतने अच्छे स्वास्थ्य के धनी बाल आपटे जी जीवन के अंतिम पड़ाव में अस्वस्थ होकर हमें इतनी जल्दी छोड़कर जाएंगे। जो व्यक्ति भी उनके सम्पर्क में आया होगा, उनकी राय मुझसे मिलती ही होगी। क्योंकि बाल जी ने जो स्वास्थ्य पूरी जिंदगी भर रखा वह एक आदर्श था। वह बहुत बार कहते थे- देखो सुषमा, मेरा वजन ना कभी एक छटांक बढ़ा और न एक छटांक घटा। न मुझे कभी सिरदर्द हुआ। कभी उन्होंने दवा की एक गोली न खायी। लेकिन न मालूम क्या हुआ लगभग डेढ़ वर्ष पहले अचानक वह बीमार पड़े और बहुत ज्यादा बीमार पड़े। कोर ग्रुप की तीन बैठकों में उनकी अनुपस्थिति देखकर मैंने एक बार पूछा कि बाल जी आते नहीं हैं, सब ठीक तो है। नितिन जी ने कहा- नहीं, वह बीमार हैं, वह अस्पताल में भी रहे हैं। अभी घर में हैं। बाल जी और बीमार! यह चौंकाने वाली खबर है। उन्हीं दिनों में मेरी दत्तात्रेय होसबोले जी से भेंट हुई। दत्तात्रेय जी और बाल जी का बड़ा घनिष्टता का सम्बन्ध था। जब दत्तात्रेय जी का केन्द्र मुम्बई था तब वह उनके घर में ही रहते थे। इससे उनकी मित्रता अनूठी थी। दत्ताजी से जिक्र होते-होते बाल आपटे जी का जिक्र आया तो उन्होंने कहा,

''बाल आपटे जी बहुत बीमार हैं। जब मैं उनके घर गया तो उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर कहा- दत्ता, मेरा अहंकार चूर-चूर हो गया।'' उन्होंने कहा, ''मैं कभी भी नहीं सोच सकता था कि वह इतने बीमार पड़ेंगे।'' ''यह बीमारी कहां पनप रही थी दत्ता, जो एकदम फूट पड़ी। और यह कहां छिपी थी और कौन से कोने में छिपी थी, इतने वर्षों तक जिसका अंकुर भी नहीं फूटा था और इतने प्रस्फुटित होकर विकसित होकर आ गयी'' कि उन्हें श्वास लेने में दिक्कत थी। एक डेढ़ वर्षों तक उन्होंने दवा खाई और उसके बाद बैठक में आएं। कमजोर लग रहे थे, मैंने पूछा- बाल जी, स्वास्थ्य ठीक है, दवा समाप्त हो गई। उन्होंने कहा कि बीमारी भी कट गयी, केवल कमजोरी बाकी है। मैंने कहा, कमजोरी भी खत्म हो जाएगी क्योंकि मुख्य बीमारी तो खत्म हो गयी। हम सब लोग यही इंतजार कर रहे थे बस जल्दी वह कमजोरी खत्म करके वापस काम में लगेंगे। बैठकों में आने लगे थे, फिर दोबारा अटैक हुआ। और फिर यह जानलेवा बन गयी। दो दिन पहले नितिन जी ने बताया कि वे वैंटिलेटर पर हैं। 24 से 48 घंटे में कुछ दु:खद समाचार आ सकता है। आमतौर पर ऐसे समय में मन तैयार हो जाता है सुनने को। लेकिन मन तैयार नहीं हुआ। और इसलिए कल जब खबर आयी तो आघात सा लगा। उनकी उम्र अधिक थी पर दिखते नहीं थे। बड़ी कम उम्र के दिखते थे।

मुझे उनके साथ बहुत समय काम करने का मिला। संगठन में भी, संसद में भी। 12 वर्ष से संसद में थे, नौ वर्ष तो उनके साथ ही थी। 3 साल पहले लोकसभा में आयी। कोई भी विषय दे दो उन विषय पर गहन अध्ययन करके बड़े निष्ठा से बोलते थे। और कहते की विषय आवंटित करते समय शिक्षा का और निष्ठा का विषय देना। लगता था अंदर से, दिल से आवाज आ रही है। संगठन में भी जो सर्वोच्च निकाय है संसदीय बोर्ड, उसके सदस्य थे। कोर ग्रुप के भी सदस्य थे और अपनी बात कहने से कभी चूकते भी नहीं थे। कल मुरलीधर राव जी मुझसे मिलने आए तो मैं कह रही थी कि सबसे ज्यादा याद आ रही थी पिछली चुनाव समिति की घटना। वे किसी उम्मीदवार की पैरवी कर रहे थे। उन्होंने कहा- मुझे मालूम है कि समिति का निर्णय नहीं बदलेगा। इसलिए मुझे कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। चूंकि मैं यह पछतावा लेकर नहीं जाना चाहता कि जो मैं कहना चाहता हूं, वह नहीं कहा। पर उन्होंने वह बात रखी, बड़ी दृढ़ता से रखी। निर्णय न बदलना था न बदला। लेकिन वे मन में यह संतोष लेकर गए कि जो मुझे कहना था, कहा।

कहां गई वह पीढ़ी। बाल आपटे के निधन के साथ एक पीढ़ी के ऐसे कार्यकर्ता का निधन हुआ जिसकी क्षति अपूरणीय है। सिद्धांतों के प्रति कटिबद्ध, निष्ठाओं के प्रति प्रतिबद्ध और अपनी बात कहते समय उसी तरह की कठोरता बरतना और उसी तरह के कठोर अनुशासन की अपेक्षा करना, जिसका वे स्वयं पालन करते थे। एक आदर्श जीवन था बाल आपटे जी का। आज वह आदर्श जीवन हमारे लिए अनुकरणीय बने। हम उनका अपने जीवन में थोड़ा भी अनुसरण कर सके तो उनके चरणों में हम लोगों की सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ■

'कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाया, स्वयं पीछे रहे'

- डॉ. मुरली मनोहर जोशी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

अभी कुछ ही दिन पहले श्री बाल आपटे जी से दिल्ली में ही भेंट हुई थी। वो अपनी लम्बी बीमारी से उठकर यहां आएंगे। बैठक में भाग लेंगे। ये देखकर हम सभी को ऐसा संतोष था कि आपटे जी का स्वास्थ्य अब उनकी गतिविधियों को जारी रखने के लिए सुधर गया है। और आने वाले समय में उसमें और अधिक सुधार होगा। लेकिन यहां से जाने के पश्चात् फिर से उनके स्वास्थ्य में गिरावट आई। फेफड़ों में काफी संकुचन हो गया था। जिससे सांस लेने में उनको कठिनाई थी। जिस मात्रा में ऑक्सीजन की आवश्यकता थी, वह दिए जाने पर भी फेफड़े काम नहीं कर पाते थे। ऐसी स्थिति में ये तो पिछले दो दिनों से लग गया था कि अब शायद उनका बहुत दिनों तक साथ-मार्गदर्शन हम लोगों को नहीं मिलेगा। बाल आपटे हमारे बहुत ही पुराने कार्यकर्ताओं में से थे। लगभग 40-45 वर्षों से मेरा उनका बहुत निकट का सम्बन्ध भी रहा है। विद्यार्थी जगत में वो बहुत लोकप्रिय रहे। विद्यार्थी परिषद् के काम को बहुत व्यापक बनाने और उसे सही दिशा में ले जाने के लिए वो सदा प्रयत्नशील थे। और सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्होंने कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाया और स्वयं पीछे रहे। आज के युग में राजनीतिक क्षेत्र में इस प्रकार के दूरदृष्टि वाले लोग अब हमारे बीच से जा रहे हैं। उनका कहना था कि आने वाले समय के लिए हमें हर क्षेत्र में विशेषकर राजनीति के क्षेत्र में योग्य और ध्येयनिष्ठ लोगों को आगे बढ़ाना चाहिए। और इस काम में तत्परता से उनके आगे बढ़ाए हुए, बनाए हुए बहुत सारे लोग आज शिक्षा के क्षेत्र में, विद्या के क्षेत्र में, भारतीय जनता पार्टी के क्षेत्र में कुछ सेवा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। हिन्दू जीवन के प्रति उनकी अटूट निष्ठा थी और उन लोगों में से थे जो 20वीं शताब्दी में इस बात की घोषणा करते थे कि 21वीं शताब्दी हमारी होगी। भारत की होगी। हिन्दू जीवन और संस्कारों की होगी। वैचारिक दृष्टि से वो बहुत स्पष्ट थे। कार्य की दृष्टि से वो बहुत ही सूक्ष्मदर्शी और व्यावहारिक थे। व्यक्तिगत जीवन में शुचिता और निष्ठा से भरे हुए थे। कार्यकर्ताओं के साथ अगाध स्नेह और प्रेम से भरे हुए थे। देश के लिए समर्पित थे। हमारे बीच से आज वो चले गए उनका अभाव हमेशा खटकता रहेगा। और ऐसे व्यक्तियों की पूर्ति किस प्रकार अधिक से अधिक हो सके, ये हम सबके लिए एक विचार का विषय बना रहेगा। ■

बाल आपटे
संगठन साधक

✍ संजीव कुमार सिन्हा

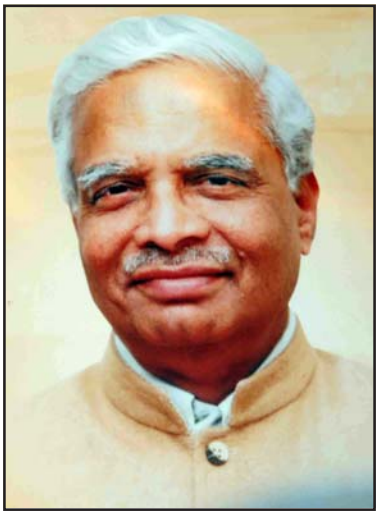

घ विचार परिवार को पूरी दुनिया का सबसे बड़ा और श्रेष्ठ आंदोलन बनाने में जिन लोगों ने अपने बौद्धिक और संगठनात्मक कौशल के जौहर दिखाकर उल्लेखनीय भूमिका निभाई, उसके एक प्रमुख स्तंभ बाल आपटे अब नहीं रहे। गत 17 जुलाई को हिंदुजा अस्पताल, मुंबई में उनका देहावसान हुआ। वे 73 वर्ष के थे। आपटे जी भौतिक रूप से भले ही हम सबसे बिछुड़ गए हों लेकिन अपने यशस्वी कर्तृत्व के चलते वे सदैव स्मरित किए जाएंगे।

आपटे जी ने चार दशकों तक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् एवं डेढ़ दशक तक भारतीय जनता पार्टी को सशक्त करने में अपने जीवन का क्षण-क्षण समर्पित कर दिया। वे सांगठनिक संस्कारों के धनी थे। लोक-संग्रह उनके जीवन का ध्येय था। अभाविप में जहां उन्होंने कार्यपद्धति एवं विचारधारा के प्रतिपादन में अपना अमूल्य योगदान दिया, वहीं भाजपा में उन्होंने कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया। अभाविप में उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष दायित्व का निर्वहन किया तो भाजपा की सर्वोच्च संस्था 12 सदस्यीय संसदीय बोर्ड के सदस्य रहे।

संघ के स्वयंसेवक के नाते प्राप्त प्रसिद्धिपरांगमुख संस्कार के चलते आपटे जी ने स्वयं को नेपथ्य में रखा और निरंतर कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाते रहे। उन्होंने देश भर में सघन प्रवास किए। सैद्धांतिक और सांगठनिक निष्ठा से सदैव ओत-प्रोत रहे। 'सादा जीवन और उच्च विचार' के दर्शन को आत्मसात किया।

आपटे जी ने प्रथम पुरुषीय विचार को अपने व्यवहार का अटूट हिस्सा बना लिया था। प्रारंभ में वे मुंबई महानगर विद्यार्थी परिषद् के संगठन मंत्री रहे। एमबीबीएस की शिक्षा प्राप्त उनकी बेटी ने भी अभाविप की पूर्णकालिक कार्यकर्ता के नाते कार्य किया। **संत तुलसीदास के इस दोहे - सिमटि सिमटि जल भरउ तलावा/जिमी सद्गुण सज्जन पहंआवा।।**- पर वे पूरी तरह खरे उतरते थे। वे अनेक गुणों के समुच्चय थे। वे बड़े मन के धनी थे। मृदुभाषी थे। मितभाषी भी। सौम्य थे। आदर्शवाद और व्यावहारिकता का संगम थे। नैतिक मूल्यों के प्रचारक थे। सहृदय थे। परिश्रमशील थे। कार्यकर्ताओं की संभाल करते थे। 'संगच्छध्वम्, संबध्वम्' ही उनके जीवन का मंत्र रहा। मिलकर चलना, मिलकर बोलना। वे तरुणवत् ही रहे। उनकी चुस्ती-फुर्ती प्रशंसनीय थी। उनका व्यक्तित्व पारदर्शी था।

आपटे जी ने दो जनांदोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। ये थे आपातकाल विरोधी आंदोलन और श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन। सत्तर के दशक में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के निरंकुश शासन के चलते देश में आपातकाल थोपा गया, मानवाधिकारों का हनन हुआ, नागरिकों पर जुल्म ढाए गए, प्रेस पर सेंसरशिप लगाई गई तो इतिहास साक्षी है कि इसके प्रतिरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की अगुआई में राष्ट्रव्यापी आंदोलन खड़ा हुआ। विद्यार्थियों के आह्वान पर ही लोकनायक जय प्रकाश नारायण सड़कों पर उतरे थे। परिषद् के देशव्यापी संगठन का लाभ इस आंदोलन को मिला। बाद में इस आंदोलन में भारतीय जनसंघ और समाजवादी संगठन भी शामिल हो गए। लेकिन परिषद् के पास प्रशिक्षित और सुशिक्षित कार्यकर्ताओं की फौज थी। इस समय परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे प्रा. बाल आपटे। उनकी दूरदर्शिता रंग लाई। और इतिहास रचा गया। आपातकाल का जबरदस्त प्रतिरोध हुआ। बड़ी संख्या में परिषद् कार्यकर्ताओं की मीसा के तहत गिरफ्तारी हुई। आपटे जी भी 19 महीने तक जेल में रहे। वहीं श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान भी आपटे जी की सक्रियता उल्लेखनीय रही। नवंबर 1990 में 'अयोध्या में नागरिकों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन' पर जो चर्चित रिपोर्ट बनी थी, आपटे जी ने उसके सदस्य

भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी का शोक संदेश

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने वरिष्ठ भाजपा नेता श्री बाल आपटे के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए श्री आपटे जी को एक मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक बताया। और कहा कि आपटे जी का निधन मेरी व्यक्तिगत क्षति है। श्री आपटे भाजपा संसदीय बोर्ड के सदस्य थे और महाराष्ट्र से दो बार राज्यसभा के सदस्य भी रहे। और इससे पहले पार्टी के उपाध्यक्ष भी रहे।

के नाते देश के प्रमुख बुद्धिजीवियों से बातचीत की और अयोध्या में जाकर स्थिति का जायजा लिया।

आपटे जी भारतीय संस्कृति एवं परंपरा के प्रबल पोषक थे और साथ ही आधुनिक दृष्टिकोण से भी विचार करते थे। वे लगातार दो बार राज्यसभा के सदस्य बने। राज्यसभा में दिए गए अपने भाषणों में वे देश और समाज के समक्ष आसन्न चुनौतियों को रेखांकित करते थे और इससे उबरने का उपाय भी सुझाते थे। शिक्षा और कानून से जुड़े विषयों पर वे गहराई से बोलते थे।

भाजपा में आपटे जी का साहित्य एवं प्रकाशन प्रकोष्ठ से विशेष लगाव रहा। वे इस प्रकोष्ठ के प्रभारी भी रहे। उन्होंने 'भारत की सदी-21वीं सदी' विशेषांक का संपादन किया था। डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास ने राज्यसभा में दिए गए उनके भाषणों पर केन्द्रित पुस्तिकाएं भी प्रकाशित की।

जब-जब देश और समाज के सामने आसन्न चुनौतियों का सामना करने की जरूरत होती है तो बाल आपटे जैसे महापुरुष सत्य और धर्म के दीपक को बुझने नहीं देते। वे सक्रियता से इसे प्रज्जवलित रखते हैं। वे सदैव हमारे प्रेरणास्रोत रहेंगे। ■

जीवन-वृत्त

श्री बलवंत परशुराम आपटे उपाख्य बाल आपटे

जन्म तिथि : 18 जनवरी 1939

जन्म स्थान : राजगुरूनगर, जिला : पुणे (महाराष्ट्र)

शैक्षिक योग्यता : एम.ए., एलएल.एम. (युनिवर्सिटी ऑफ मुंबई)

दायित्व संभाला :

1996-98 एडिशनल एडवोकेट जनरल, महाराष्ट्र

राज्यसभा सदस्य : अप्रैल 2000 से अप्रैल 2012 तक।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी (2002 से 2010 तक)।

सदस्य, केंद्रीय संसदीय बोर्ड, भाजपा।

सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियां :

राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप)। अभाविप में 38 साल तक सक्रिय। शिक्षण प्रसारक मंडली, एक शैक्षिक संस्थान, जो 20 महाविद्यालयों और विद्यालयों चला रही है, उसके शासी परिषद से दो दशकों तक जुड़ाव।

अध्यक्ष, एडवोकेट्स एसोशिएशन ऑफ वेस्टर्न इंडिया, उच्च न्यायालय, मुंबई। अध्यक्ष, सावरकर, दर्शन प्रतिष्ठान (ट्रस्ट), मुम्बई। उपाध्यक्ष, रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी, मुंबई। संस्थापक सदस्य, अंतरराज्यीय छात्र जीवन दर्शन, मुंबई। अध्यक्ष, विद्यार्थी निधि ट्रस्ट।

प्रकाशित पुस्तकें :

(1) शैक्षिक परिवर्तन, 1977, (2) यशवंत (मराठी में), 1988, (3) अयोध्या में नागरिकों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन पर रिपोर्ट, नवंबर 1990 और (4) हिंदुत्व पर सुप्रीम कोर्ट. (सं) 2005

विदेश प्रवास :

यूएसएसआर, भारत-यूएसएसआर के एक सदस्य के रूप में, 1978 में युवा सम्मेलन। संसदीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के नाते जर्मनी, स्विटजरलैंड, चीन, दक्षिण कोरिया, पनामा, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका। अक्टूबर 2008 में जेनेवा में आयोजित अंतर संसदीय संघ की 119 विधानसभा में भाग लिया।

अन्य जानकारी :

आपातकाल (1975-1977) के खिलाफ लड़ाई लड़ी। मीसा के तहत फरवरी 1975 से दिसम्बर 1977 तक हिरासत में लिए गए। प्रोफेसर के रूप में कानून पढ़ाया। न्यू लॉ कॉलेज, मुंबई में बारह वर्ष। मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई में बारह वर्ष। उच्च न्यायालय, मुंबई द्वारा वरिष्ठ अधिवक्ता नामित। सदस्य, सीनेट, मुंबई विश्वविद्यालय।

देहावसान : 17 जुलाई, 2012 ■

जगदीश शेट्टार बने कर्नाटक के मुख्यमंत्री

कर्नाटक प्रदेश भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री जगदीश शेट्टार ने 12 जुलाई 2012 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। राज्यपाल श्री हंसराज भारद्वाज ने राजभवन में आयोजित एक सादे समारोह में उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। पिछले चार साल में वह राज्य में भाजपा के तीसरे मुख्यमंत्री हैं। वहीं, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री केएस ईश्वरप्पा और श्री आर अशोक ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली। पूर्व मुख्यमंत्री श्री बीएस येदियुरप्पा एवं श्री सदानंद गौड़ा और पार्टी राष्ट्रीय महासचिव श्री अनंत कुमार शपथ ग्रहण समारोह में मौजूद थे। श्री शेट्टार ने पूर्व मुख्यमंत्री श्री डी. वी. सदानंद गौड़ा का स्थान लिया है। कर्नाटक के नए मुख्यमंत्री राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े रहे हैं। श्री शेट्टार बेंगलुरू से 400 किलोमीटर उत्तर में धारवाड़ जिले के हुबली ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र से चार बार विधायक रह चुके हैं। श्री शेट्टार को 11 जुलाई 2012 को भाजपा विधायक दल का नेता चुना गया था। ■

युवाओं के मार्गदर्शक बाल आपटे नहीं रहे

ओम प्रकाश कोहली

मंगलवार 17 जुलाई, 2012 की शाम को देश भर के विद्यार्थी परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के कार्यकर्ता श्री बाल आपटे के दिवंगत होने का समाचार सुनकर दु:ख में डूब गए। महाराष्ट्र के पुणे जिले में 18 जनवरी 1939 को जन्मे श्री आपटे मूलत: संघ के स्वयंसेवक थे और उनके सार्वजनिक कार्यकलाप के प्रमुखतया दो क्षेत्र थे- विद्यार्थी परिषद और भारतीय जनता पार्टी। विद्यार्थी परिषद के तीन स्तंभों- श्री यशवंतराव केलकर, श्री मदनदास देवी और श्री बाल आपटे - में से वह एक थे। श्री यशवंतराव केलकर के निधन से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद को जो अपूरणीय क्षति पहुंची थी, उसे भरने और संगठन को संभालने की जिम्मेदारी मुख्यत: श्री मदनदास देवी और श्री आपटे के कंधों पर आ पड़ी थी। आपटे जी लगभग चार दशक तक एकाग्र भाव से विद्यार्थी परिषद के काम में लगे रहे। राजनीतिक क्षेत्र में आने पर भी विद्यार्थी परिषद के मार्गदर्शक की उनकी भूमिका बनी रही। अब इन तीन स्तंभों में दूसरा स्तंभ भी नहीं रहा। श्री आपटे ने मुम्बई विश्वविद्यालय से एम.ए. और एल.एल.बी. की उच्च शिक्षा प्राप्त की और वकालत का व्यवसाय चुना। वकालत के व्यवसाय में उन्होंने ऊंची प्रतिष्ठा अर्जित की। 1996-98 में वह महाराष्ट्र राज्य के एडीशनल एडवोकेट जनरल बने। उन्होंने मुम्बई के न्यू लॉ कॉलेज में और मुम्बई विश्वविद्यालय में लगभग दो दशक से कुछ अधिक वर्षों तक कानून का शिक्षण दिया। वह मुम्बई हाईकोर्ट के सीनियर एडवोकेट नामज़द किए गए।

श्री आपटे पेशे से भले ही वकील रहे हों, किन्तु प्रकृति से वह शिक्षक थे। अध्ययन में उनकी प्रगाढ़ रूचि थी। वह मुम्बई विश्वविद्यालय की सीनेट के भी सदस्य रहे। विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता और आगे चलकर उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष और मार्गदर्शक के रूप में उन्होंने असंख्य छात्र-छात्राओं और युवाओं के जीवन को संवारने, ढालने और दिशा देने का काम किया। विद्यार्थी परिषद के असंख्य कार्यकर्ताओं के हृदयों को श्री आपटे के आत्मीयतापूर्ण व्यवहार ने स्पंदित और पुलकित किया। विद्यार्थी परिषद के सिद्धांतों और आदर्शों को आपटे जी ने अपने आचरण और व्यवहार से कार्यकर्त्ताओं को समझाया, कोरी बौद्धिक चर्चा से नही। विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय टीम की बैठकों में, कार्यकारिणी और अधिवेशनों में दिए गए उनके भाषणों में शिक्षा जगत और छात्र तथा युवा वर्ग की समस्याओं और चुनौतियों के बारे में उनकी वैचारिक स्पष्टता और गहराई झलकती रही है। कार्यकर्ताओं से अनौपचारिक बातचीत में उन्हें विशेष आनंद मिलता था। कार्यकर्ताओं के निजी जीवन की वह बराबर चिंता करते थे और एक जिम्मेदार अभिभावक के रूप में उनकी व्यक्तिगत कठिनाइयों और परेशानियों को दूर करने के प्रति सजग और तत्पर रहते थे।

राष्ट्र निर्माण में छात्रों की (युवाओं की) भूमिका को वह देश-विदेश के छात्र-युवा आन्दोलनों के उदाहरण देकर समझाया करते थे। 'छात्र केवल कल का नागरिक ही नहीं', आज का नागरिक भी है, आपटे जी ने युवा पीढ़ी में यह दायित्व बोध जगाने का निरन्तर प्रयत्न किया है। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में छात्रों की भूमिका को उन्होंने न केवल वैचारिक धरातल पर समझाने का प्रयत्न किया, बल्कि कर्म, आचरण और व्यवहार के धरातल पर उन्हें पुनर्निर्माण के बहुविध कार्यकलापों में प्रवृत्त किया।

1975 में आपातकाल के दौरान उन्होंने लोकतंत्र की पुन: प्रतिष्ठा के प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं को श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे आन्दोलन में अपनी प्रभावी भूमिका निभाने की दिशा में प्रवृत्त किया। वह स्वयं भी मीसा में दिसम्बर 1975 से फरवरी 1977 तक बन्दी रहे।

विगत 12-14 वर्षों से आपटे जी प्रत्यक्ष राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय हुए। भारतीय जनता पार्टी में उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभाली। वह 2000 से 2012 तक राज्यसभा के सदस्य रहे, भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे, कोर ग्रुप के सदस्य रहे और संसदीय बोर्ड के सदस्य भी रहे। भाजपा में उनकी भूमिका संगठन कार्यों में अधिक रहती थी। स्वयं के अनुशासित जीवन के समान ही वह भाजपा संगठन में भी अनुशासन के सुदृढ़ीकरण की उपाय-योजनाओं पर विचार करते रहते थे। कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण उनकी सहज रूचि का विषय रहा है। प्रबोधन और प्रशिक्षण उनकी प्रकृति में ही था। **भाजपा में प्रशिक्षण की प्रवृत्ति को मजबूत बनाने में उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया है।** संसद के भीतर और संसदीय समितियों में उन्होंने प्रस्तुत विषयों पर गंभीर विचार व्यक्त किए और मूल्यवान सुझाव दिए। वह जितने अनुशासन प्रिय थे उतने ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर भी। आज भाजपा में संगठन, विधान सभा, संसद, सभी स्तरों पर विद्यार्थी परिषद के अनेक पूर्व कार्यकर्ता महत्वपूर्ण दायित्वों पर कार्यरत हैं। इन्हें इन दायित्वों के योग्य बनने में जिस प्रशिक्षण प्रक्रिया से गुज़रना पड़ा है, उस प्रशिक्षण प्रक्रिया को स्वरूप और आकार देने वालों में श्री आपटे जी को बराबर याद किया जाता रहेगा। हम उनकी स्मृति को नमन करते हैं। ■

(लेखक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे हैं। संप्रति आप भाजपा मुख्यालय के प्रभारी हैं)

वे सदैव सिद्धांतनिष्ठ व सांगठनिक मूल्यों के आग्रही रहे

✍ राजकुमार भाटिया

fdसी भी देश व समाज के सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले थोड़े ही लोग होते हैं। उनमें से प्रत्येक का कुछ विशिष्ट योगदान होता है, जिसके कारण समाज-जीवन में वह व्यक्ति अपनी छाप छोड़ जाता है। श्री बाल आपटे भी भारत के राष्ट्रीय जीवन में ऐसे ही विशिष्ट योगदान करने वाले व्यक्तियों में से एक थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक के नाते प्रथमत: उन्होंने भारत के अद्वितीय छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (अभाविप) के निर्माण में मुख्य भूमिका निभाई एवं तत्पश्चात् भारतीय राजनीति के एक शीर्ष दल भारतीय जनता पार्टी में विशेष भूमिका निभाई। यद्यपि अभाविप की स्थापना 1948 में हुई थी पर व्यवस्थित एवं नियमित रूप से उसका कार्य 1957-58 में प्रारंभ हुआ, जब प्राध्यापक यशवंतराव केलकर ने उसमें कार्य करना प्रारंभ किया। यशवंतराव को इस कार्य में जिन दो व्यक्तियों का सर्वाधिक सहयोग मिला वे थे श्री मदनदास (इन दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक) एवं श्री बाल आपटे। इन तीनों लोगों के कुशल नेतृत्व एवं संगठन क्षमता से भारत को अभाविपरूपी वह छात्र संगठन मिला, जो संगठन के रूप में भारत में अपना विशिष्ट योगदान करते हुए छाप छोड़ रहा है।

जब 1987 में यशवंतराव का निधन हो गया एवं 1991 में श्री मदनदास रा.स्व.संघ के मूल कार्य में चले गये तब श्री मदनदास के दो सहयोगियों श्री दत्तात्रेय होसबोले (इस समय रा.स्व.संघ के सह सरकार्यवाह) एवं श्री सदाशिव देवधर (इस समय वनवासी कल्याण आश्रम में कार्यरत) के साथ श्री बाल आपटे ने अभाविप का नेतृत्व संभाला, जिसका निर्वाह उन्होंने सन् 2000 तक किया।

सन् 2000 में भाजपा सांसद बनने से पूर्व आपटे जी के जीवन के करीब चार दशक अभाविप में व्यतीत हुए थे। पहले विद्यार्थी व बाद में वकील एवं अंशकालिक प्राध्यापक के नाते उन्होंने अभाविपरूपी भवन के निर्माण में मुख्य भूमिका निभाई थी। प्रा. यशवंतराव के मार्गदर्शन में व संगठनमंत्री श्री मदनदास के सहकारी के रूप में अभाविप को एक उद्देश्यपूर्ण, स्वतंत्र, स्वायत्त अद्वितीय एवं संपूर्ण छात्र संगठन बनाने में उन्होंने तन-मन-धनपूर्वक योगदान दिया। श्री यशवंतराव और उनके घर मुंबई में थे और अभाविप का मुख्यालय भी मुंबई में था इसलिए मुंबई से ही अभाविप का संचालन होता था।

अभाविप में बिताए अपने चार दशकों में व्यावसायिक एवं पारिवारिक जीवन में से आपटे जी अधिकतम समय निकालते थे, जिसे वे मुंबई, महाराष्ट्र व पूरे देश में अभाविप का कार्य फैलाने में व्यय करते थे। खूब प्रवास करना और जेब से भी खूब खर्च करना उनकी शैली थी। जब अभाविप के पास मुंबई में पर्याप्त व्यवस्था नहीं थी तब अभाविप के प्रमुख लोगों को प्रवास के दौरान मुंबई में वे अपने छोटे से घर में ठहराते भी थे और उन्हें पूर्ण आतिथ्य प्रदान करते थे। आयु में वे मदनदास जी से भी बड़े थे और प्रा. यशवंतराव के पश्चात् अभाविप में अनेक कार्यकर्ताओं के पालक व अभिभावक का कार्य वे करते थे। कार्यकर्ताओं का आर्थिक मदद करने में वे सदा उदारता बरतते थे।

आपटे जी सदा ही सिद्धांतनिष्ठ व सांगठनिक मूल्यों के आग्रही रहे। स्पष्टवादिता उनका स्वभाव था। विचारधारा व संगठन के हित में कटु लगने वाली बातें भी वह दृढ़ता से बोलते थे। कभी-कभी क्रोधित हो जाना भी उनके व्यक्तित्व में था। परन्तु वे जो भी करते अथवा कहते थे, उसमें उनका स्वार्थ नहीं होता था। अपने उपरोक्त व्यक्ति वैशिष्ट्य अनुरूप जो वे दूसरों से अपेक्षा करते थे, उसे वे खुद पर भी लागू करते थे।

अभाविप के निर्माण व विकास के कई पहलू थे जैसे उसकी सैद्धांतिक भूमिका तय होना, कार्यपद्धति, संगठन तंत्र व गतिविधियां विकसित होना आदि। ऐसे सभी विषयों में आपटे जी का भरपूर योगदान रहा। चिंतन-मनन हो अथवा लेखन या फिर प्रतिपादन, सभी में उनकी बौद्धिक व वक्तृत्व क्षमता प्रगट होती थी। विविध विषयों के प्रारूप बनने हों या प्रस्ताव या फिर साहित्य लेखन होना हो अथवा कार्यकर्ताओं या समाज के सम्मुख परिषद् संबंधी विचारों की

अभिव्यक्ति होनी हो, सभी में आपटे जी की क्षमताओं का लाभ परिषद् को मिलता था।

बीसवीं सदी के सत्तर के दशक के प्रारंभ में आधुनिक काल में राष्ट्र जीवन में विद्यार्थियों की भूमिका संबंधी एक मौलिक प्रतिपादन अभाविप ने किया कि 'छात्र कल का नहीं, आज का नागरिक है।' अभाविप का यह प्रतिपादन अनेक देशों व भारत में निभाई जा रही विद्यार्थियों की भूमिका एवं परिषद् के अपने अनुभवों पर आधारित था। अभाविप के इस प्रतिपादन में भी आपटे जी की बौद्धिक क्षमता की बड़ी भूमिका थी।

अभाविप की स्थापना की रजत जयंती के अवसर पर मुंबई में 1974 में आयोजित विशाल राष्ट्रीय अधिवेशन में आपटे जी अभाविप के अध्यक्ष बने थे। 5 वर्ष अध्यक्ष रहने के पश्चात् 1979 से 2000 तक परिषद् की उन्होंने वैसी ही चिंता की जैसे अध्यक्ष रहते हुए की थी। वास्तव में अभाविप में कार्यकर्ताओं को बिना पद पर रहते हुए कार्य करने का भरपूर संस्कार मिलता है। उसी अनुरूप आपटे जी ने भी कार्य किया।

आपटे जी की राष्ट्रीय सामाजिक प्रतिबद्धता केवल उन तक सीमित नहीं थी। उनका पूरा परिवार ही सामाजिक कार्यकर्ताओं का परिवार है। दो अविवाहित अभाविप कार्यकर्ता विवाह के पश्चात् पति-पत्नी (बाल आपटे व निर्मला आपटे) के रूप में कार्यकर्ता बने रहे। अनेक वर्षों पश्चात् निर्मला आपटे जी ने भारतीय स्त्रीशक्ति नामक स्त्री संगठन प्रारंभ किया, जिसमें वे आज भी कार्यरत हैं। दोनों की बेटी व एकमात्र संतान डॉ. जाह्नवी विद्यार्थी काल में अभाविप की कार्यकर्ता बन गई, पढ़ाई के पश्चात् दो वर्ष वह अभाविप की पूर्णकालिक रही व अभी भी वह अभाविप कार्यकर्ता है। आपटे दंपत्ति ने दामाद के रूप में शिरीष केदारे को चुना, जो छात्र जीवन में अभाविप का कार्यकर्ता था, बाद में परिषद् का पूर्णकालिक था और तत्पश्चात् सामाजिक प्रतिबद्धता से व्यवसाय करता है।

चार दशकों तक अभाविप का कार्य करने के पश्चात् आपटे जी ने जब 60 वर्ष की आयु पार कर ली तब भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने उन्हें भाजपा में आमंत्रित किया और राज्यसभा की सदस्यता के लिए उनकी स्वीकृति चाही। आपटे जी को लगा कि आयु के कारण अभाविप से तो उन्हें मुक्त होना चाहिए पर राज्यसभा के लिए उन्हें उचित स्तर से अनुमति लेनी चाहिए। अनुमति मिलने के पश्चात् ही उन्होंने राज्यसभा सदस्य बनने की स्वीकृति दी। तत्पश्चात् वे दो बार राज्यसभा सदस्य बने व भाजपा के वरिष्ठ पदों पर भी नियुक्त हुए।

आपटे जी सदा ही सिद्धांतनिष्ठ व सांगठनिक मूल्यों के आग्रही रहे। स्पष्टवादिता उनका स्वभाव था। विचारधारा व संगठन के हित में कटु लगने वाली बातें भी वह दृढ़ता से बोलते थे। कभी-कभी क्रोधित हो जाना भी उनके व्यक्तित्व में था। परन्तु वे जो भी करते अथवा कहते थे, उसमें उनका स्वार्थ नहीं होता था। अपने उपरोक्त व्यक्ति वैशिष्ट्य अनुरूप जो वे दूसरों से अपेक्षा करते थे, उसे वे खुद पर भी लागू करते थे। वे चाहते तो उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बन सकते थे। वकील के नाते उन्हें इसके लिए आमंत्रित किया गया था। उच्च न्यायालय में न्यायाधीश बनते तो सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश बनने का मार्ग भी प्रशस्त हो सकता था। पर संगठन हित में सामाजिक प्रतिष्ठा देने वाले इस पर्याय का उन्होंने वरण नहीं किया।

निजी आचरण के सभी मापदण्डों पर वे खरे उतरते थे। 1999 में जनवरी में जब उनका षष्टीपूर्ति दिन आने वाला था तब हमने उसे जोर-शोर से मनाना चाहा। पर वे अड़ गये। केवल परिषद् के पूर्व व वर्तमान कार्यकर्ताओं के सहभोज के लिए वे तैयार हुए। कोई भाषण, वक्तव्य नहीं। सहभोज का व्यय भी उन्होंने स्वयं वहन किया। धन कमाने व संपत्ति बनाने का मोह उन्हें कभी नहीं हुआ।

मुंबई की एक सोसाइटी के एक छोटे फ्लैट को एक बार घर बनाया तो अंत तक उसी में रहे। राज्यसभा की सदस्यता समाप्त हुई तो समय सीमा से पूर्व ही सरकारी घर छोड़ दिया।

भाजपा में जैसी उनकी हैसियत थी उसके आधार पर चाहते तो बड़ा सरकारी घर प्राप्त कर सकते थे पर राज्यसभा सदस्यता के 12 वर्ष उन्होंने सदस्यों के लिए बने फ्लैट्स में रहकर गुजार दिये। जिस खाने की मेज पर वे स्वयं भोजन करते थे उसी मेज पर उनके निजी सहायक व गाड़ी चालक भी भोजन करते थे। उनकी श्रेष्ठता को व्यक्त करने वाले ऐसे अनेक उदाहरण आपटे जी के जीवन में मिल जायेंगे।

उनकी स्मृति को मेरा शत शत नमन्।■

(लेखक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे हैं और आपटे जी के साथ उन्होंने लंबे समय तक परिषद् में कार्य किया है। वर्तमान में आप नेशनल डेमोक्रेटिक टीचर्स फ्रंट के अध्यक्ष हैं।)

बीसवीं सदी के सत्तर के दशक के प्रारंभ में आधुनिक काल में राष्ट्र जीवन में विद्यार्थियों की भूमिका संबंधी एक मौलिक प्रतिपादन अभाविप ने किया कि 'छात्र कल का नहीं, आज का नागरिक है।' अभाविप का यह प्रतिपादन अनेक देशों व भारत में निभाई जा रही विद्यार्थियों की भूमिका एवं परिषद् के अपने अनुभवों पर आधारित था। अभाविप के इस प्रतिपादन में भी आपटे जी की बौद्धिक क्षमता की बड़ी भूमिका थी।

जब केन्द्र में राजग का शासन आयेगा तो हम किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर कर्ज देंगे : गडकरी

संवाददाता द्वारा

Hkkरतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने अटल किसान महापंचायत की अध्यक्षता करते हुए कहा कि केन्द्र में कांग्रेसनीत यूपीए सरकार हर मोर्चे पर नाकारा साबित हुई है। केन्द्र सरकार ने किसान और गांव को वित्तीय संस्थाओं का बंधक बना दिया है। कृषि के लिए आवश्यक सामग्री के लिए किसान को बाजारी ताकतों के रहमो-करम पर छोड़ दिया है। देश में खाद कंपनियों ने कांग्रेस के सरंक्षण में कार्टेल बनाकर खाद की कीमतों में तीन गुना 555 रू. से 1272 रू. प्रति बोरी की मूल्य वृद्धि करके किसानों की कमर तोड़ दी है। आजादी के 65 वर्षो में साढ़े पांच दशक कांग्रेस सत्ता में रही है। गरीबी हटाने के नारे दिये, लेकिन कांग्रेस गरीब, गांव, किसान और मजदूर के साथ नहीं वह कॉरपोरेट और शोषण करने वाली शक्तियों के साथ खड़ी दिखाई देती है। उन्होनें मध्यप्रदेश सरकार को देश में अग्रणी सरकार बताते हुए कि जहां केन्द्र सरकार ने किसानों की कमर तोड़ी हैं, वही शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में राज्य सरकार ने किसानों का हौंसला बढ़ाया है और मध्यप्रदेश में गांव, गरीब, किसान और मजदूर राज्य सरकार की योजनाओं की धुरी बनकर सशक्तिकरण की ओर बढ़ रहे है।

स्वागत भाषण में प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रभात झा ने प्रदेश के अन्नदाताओं को नमन करते हुए कहा कि 16 जून 2012 का दिन किसान इतिहास में अमर हो गया है। जब 15 जून को प्रदेश का मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान खाद के मूल्यों में तीन गुना वृद्धि किये जाने के विरोध में केन्द्र सरकार की खिलाफत में 24 घंटे के उपवास पर बैठे थे और किसानों को दूसरे दिन संबोधित करते हुए शिवराज सिंह चौहान ने मध्यप्रदेश में 'जीरो' प्रतिशत ब्याज पर फसल कर्ज देने की घोषणा की थी। खाद मूल्य वृद्धि के कारण किसानों के घावों पर मरहम लगाते हुए शिवराज सिंह चौहान ने दो बातें कही थी। पहली तो यह कि जीरो प्रतिशत ब्याज पर 1 अप्रैल 2012 से ही फसल कर्ज देने की व्यवस्था होगी और दूसरी बात यह कि केन्द्र की किसान विरोधी नीतियों के विरोध में भारतीय जनता पार्टी और सरकार तटस्थ दर्शक बनकर नहीं बैठी रहेगी।

शिवराज देश के किसानों की आवाज बनकर उभरे- नरेन्द्र सिंह तोमर

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और सांसद श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि शिवराज सिंह चौहान देश में किसानों की आवाज बनकर उभरे हैं। उन्होंने कहा कि देश में किसानों की

आवाज चौधरी चरणसिंह और देवीलाल ने मुखरित की थी लेकिन लंबे समय से इसमें ठहराव आ गया था। केन्द्र सरकार मनमाने तरीके से किसान विरोधी नीतियां थोपने लगी है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश और देश के किसानों को आवाज दी है और नई दिशा दी है।

मध्यप्रदेश सरकार ने अटलबिहारी वाजपेयी की अवधारणा को दिशा दी है - थावरचंद गहलोत

पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री व सांसद श्री थावरचंद गहलोत ने कहा कि आजादी के बाद देश में अटलजी के नेतृत्व में जो सरकार गठित हुई उसने देश की वास्तविकता को जांचा-परखा और सही दिशा दी है। शिवराज सिंह चौहान ने वाजपेयी जी की अवधारणा को आगे बढ़ाया है।

उन्होंने कहा कि अटल जी ने पहली बार ब्याज कम करने और किसानों को कम ब्याज पर कर्ज दिये जाने के मामले में विचार करने के लिए राज्यों के मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखा था।

2013 में भी शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश में किसानों की सरकार बनेगी - अनंत कुमार

अटल किसान महापंचायत को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय महासचिव एवं प्रदेश प्रभारी श्री अनंत कुमार ने कहा कि यह किसान महापंचायत देश की सबसे बड़ी महापंचायत है। प्रदेश में रिकार्ड तोड़ कृषि उत्पादन हुआ और किसानों को लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने में राज्य सरकार सफल रही है। मध्यप्रदेश में सरकार के विचार का केन्द्र बिन्दु गरीब, मजदूर और किसान है। उन्होनें प्रदेश भर से आये किसानों के उत्साह की सराहना करते हुए आह्वान किया कि आने वाले 2013 में प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में किसानों की सरकार का गठन करें और 2014 लोकसभा चुनाव में यूपीए की सरकार को उखाड़ फेंके।

किसान की समृद्धि और ग्रामीण विकास की अवधारणा अटलजी की देन - राजनाथ सिंह

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने मध्यप्रदेश में सरकार की क्रांतिकारी नीतियों और संगठन की गतिशीलता के लिए शिवराज सिंह चौहान और प्रभात झा को बधाई देते हुए कहा कि मध्यप्रदेश में कृषि की विकास दर को 18 प्रतिशत पहुंचाना भारतीय कृषि के इतिहास में एक नया कीर्तिमान हैं। यह सत्ता और संगठन के समन्वय का परिणाम है। प्रदेश को जिस तरह क्रांतिकारी नेतृत्व शिवराज सिंह चौहान ने दिया है उसी तरह भाजपा संगठन को तेजतर्रार प्रदेश अध्यक्ष के रूप में कर्मठ राजनेता प्रभात झा का नेतृत्व प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि यदि मध्यप्रदेश के नेतृत्व जैसी अनुभूति केन्द्र सरकार की सत्ता में बैठे हुक्मरानों को प्राप्त हो जाये तो देश का नक्शा बदला जा सकता है। भारत को विश्व शक्ति बनने से कोई रोक नहीं सकता। राजनाथ सिंह ने कहा कि आजाद भारत में गांव, गरीब, किसान और मजदूर की वास्तविक पीड़ा सबसे पहले अटलबिहारी वाजपेयी ने समझी और सत्ता में आने के बाद गांव को सड़कों से जोड़कर विकास की रोशनी पहुंचाने का काम किया। देश में अटलजी ने गरीबों को 2 रू. किलो गेहूं और 3 रू. किलो चावल देने का विचार धरातल पर उतारा। मध्यप्रदेश में 72 लाख किसानों को क्रेडिट कार्ड दिये जाना किसानों के प्रति सम्मान की भावना का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि सही भारत अट्टालिकाओं में नहीं गावों में बसता है। भारत के आर्थिक विकास का मॉडल किसान हो।

किसान अर्थव्यवस्था की रीढ़ है- सुषमा स्वराज

अटल किसान महापंचायत को संबोधित करते हुए लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि अटल किसान महापंचायत में उमड़ते जनसमूह और उसमें उत्साह को देखते हुए संकेत मिलता है कि तीसरी बार मध्यप्रदेश में किसानों के समर्थन से शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में सरकार का गठन होगा। उन्होंने किसान को अर्थव्यवस्था की रीढ़ के रूप में सशक्त किया है। कृषि को लाभकारी बनाने के लिए मध्यप्रदेश में उल्लेखनीय कार्य हुये है। खाद्य सुरक्षा को सशक्त बनाने का काम मध्यप्रदेश में मॉडल के रूप में किया गया है।

अटल किसान महापंचायत के अवसर पर नितिन गड़करी के नेतृत्व में पार्टी पदाधिकारियों, किसान मोर्चा के पदाधिकारियों और प्रदेश पदाधिकारियों द्वारा मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को हल भेंटकर उनका भव्य अभिनंदन किया गया। प्रभात झा ने स्मृति चिह्न अतिथियों को भेंट किये। किसानों के वरिष्ठ नेता सतपाल मलिक, ओमप्रकाश धनकड़, बंशीलाल गुर्जर तथा अन्य पदाधिकारियों ने

शिवराज सिंह चौहान की किसान हितैषी नीतियों के लिए उनका आभार प्रदर्शन किया।

गरीब, मजदूर एवं किसान मेरे भगवान हैं : शिवराज सिंह चौहान

अटल किसान महापंचायत के अवसर पर किये गये अभिनंदन के अवसर पर शिवराज सिंह चौहान ने मर्मस्पर्शी स्वागत से अभिभूत होकर प्रदेश के किसानों का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी और भरोसा दिलाया कि प्रदेश में अब तक किसानों के हित में जो भी काम किये गये है वह पड़ाव है, मंजिल नहीं है। हमें किसानों के हित में बहुत काम करना है। खाद की बढ़ी हुए कीमतें वापस कराने के लिए केन्द्र सरकार को विवश किया जायेगा। विधानसभा में मूल्य वृद्धि वापसी के लिए संकल्प लाया जायेगा।

कृषि कार्य के दौरान किसान की मृत्यु होने पर 1 लाख की सहायता दी जायेगी। किसानों को अस्वस्थता, गंभीर बीमारी के उपचार के लिए पर्याप्त सहायता दी जायेगी। सिंचाई संसाधनों एवं औजारों पर मिलने वाले अनुदान में वृद्धि की जायेगी। नदी जोड़ो योजना के अमल में राज्य सरकार सक्रियता दिखायेगी।

उन्होंने केन्द्र सरकार के सामने तीन प्रमुख मांगें प्रस्तुत की। खाद के दाम कम किये जाये, बीज उत्पादन पर 1000 रू. क्विंटल की सब्सिडी बहाल की जाये और पाले को प्राकृतिक आपदा में शामिल किया जाये। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार ने 14 हजार करोड़ रू. पाला पीड़ित किसानों को बांटे थे लेकिन केन्द्र सरकार ने फूटी कौड़ी नहीं दी।

उलटे कपास के निर्यात पर रोक लगाकर किसानों का अहित किया। शिवराज सिंह चौहान ने कृषि उत्पादन के आयात-निर्यात को फसल-चक्र से जोड़ने की मांग की और कहा कि राष्ट्रीयकृत बैंकों से भी किसानों को जीरो प्रतिशत अथवा न्यूनतम ब्याज पर कर्ज दिये जाने की केन्द्र सरकार को व्यवस्था करना चाहिए। किसानों के लिए सामाजिक आर्थिक सुरक्षा दी जाये। बुढ़ापे में किसान को पेंशन का हकदार बनाया जाये। खाद और कृषि के लिए केन्द्र नीति बनाये तदर्थ काम बंद करें

अटल किसान महापंचायत का संचालन प्रदेश महामंत्री नंदकुमार सिंह चौहान ने किया। इस अवसर पर पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा, कैलाश जोशी, कैलाश सारंग, प्रदेश संगठन महामंत्री अरविन्द मेनन, सांसद कप्तान सिंह सोलंकी, माखन सिंह चौहान, विक्रम वर्मा, डॉ. सत्यनारायण जटिया, वरिष्ठ मंत्री बाबूलाल गौर सहित सांसद, विधायक एवं प्रदेश पदाधिकारीगण उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रदेश भर से आए 4 लाख से अधिक किसानों ने अटल महापंचायत में भाग लेकर केन्द्र सरकार के विरूद्ध एकजुटता दिखायी।■

भाजपा निवेशक प्रकोष्ठ

'चार अर्थशास्त्रियों ने डुबो दी अर्थव्यवस्था'

यूपीए सरकार की गलत आर्थिक नीतियों तथा भ्रष्टाचार ने देश की अर्थव्यवस्था को ध्वस्त करके रख दिया है। ऐसी केंद्र सरकार जिसमें चार अर्थशास्त्री हों, देश की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था देख विश्व के निवेशक भारत से पल्ला झाड़ते नजर आ रहे हैं। यह भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद राजनाथ सिंह ने 14 जुलाई को रमणरेती मार्ग (वृन्दावन) स्थित बसेरा होटल में भाजपा निवेशक प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक के उद्घाटन सत्र में कही। उन्होंने कहा कि देश का प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, वित्तमंत्री एवं योजना आयोग के उपाध्यक्ष चारों स्वयं को श्रेष्ठ अर्थशास्त्री साबित करते आए हैं। लेकिन जिस दिन से यूपीए सरकार का कार्यकाल शुरू हुआ, देश की अर्थव्यवस्था बुरी तरह चरमरा गई है। उन्होंने केन्द्र की गलत आर्थिक नीति, सकल घरेलू उत्पाद में कमी एवं मंत्री- अधिकारियों द्वारा किए जा रहे घोटालों को इसके लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार बताया। उन्होंने मनरेगा पर केंद्र की रिपोर्ट को भी खारिज कर दिया। श्री सिंह ने कहा कि एनडीए सरकार के समय देश की आर्थिक नीति मजबूत थी, इसी कारण विश्वभर के निवेशक देश में अपना पैसा निवेश करने के लिए आए। उन्होंने निवेशक प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से आह्वान किया कि देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए केन्द्र सरकार की आंखें खोलने का कार्य करें। जनता के पास समय है कि 2014 के लोकसभा चुनाव में एनडीए की सरकार बनाएं जिससे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हो सके। जब अर्थव्यवस्था मजबूत होगी तभी देश मजबूत होगा और विश्वभर के निवेशक देश में निवेश करेंगे। बैठक में उत्तर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने कहा कि सट्टा व्यापार एवं वायदा कारोबार के साथ एमसीएक्स ने देश की नींव हिलाकर रख दी है। इस व्यापार ने लाखों घरों को बर्बादी के कगार पर पहुंचा दिया। इससे पूर्व दो दिवसीय कार्यसमिति बैठक का शुभारम्भ श्रीराजनाथ सिंह एवं डॉ. वाजपेयी ने भारत माता, श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं श्री बांके बिहारी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया। बैठक में प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री अरुण सिंह, सह संयोजक श्री अशोक गोयल देवराह, भाजपा मोर्चा एवं प्रकोष्ठ सम्न्वयक श्री महेन्द्र पाण्डे, भाजपा राष्ट्रीय महामंत्री श्री जगत प्रसाद नड्डा सहित अनेक वरिष्ठ पार्टी नेता उपस्थित रहे। ■

उत्कृष्ट अमेरिकी इतिहासकार ने इतिहास में भारत पर ब्रिटिश शासन को सबसे बड़ा अपराध बताया

– लालकृष्ण आडवाणी

eदर इण्डिया शीर्षक वाली घिनौनी भारत विरोधी पुस्तक लिखने वाली कुख्यात लेखिका केथरीन मायो का नाम मैंने पहली बार तब सुना जब मैं कराची में विद्यार्थी था। महात्मा गांधी ने इस पुस्तक की निंदा 'गटर इंस्पेक्टर की रिपोर्ट' के रुप में की!

मायो एक अमेरिकी पत्रकार थी जिसने लगभग 1927 में भारत में ब्रिटिश राज के पक्ष में यह पुस्तक लिखी। उसने हिन्दू समाज, धर्म और संस्कृति पर तीखे हमले किए।

लगभग इसी समय मैंने दो अन्य अमेरिकी लेखकों के बारे में सुना था जिन्होंने खुले दिल से भारत के पक्ष और ब्रिटिशों के विरुद्ध लिखा था। इनमें से पहले विल डुरंट थे जो विश्व प्रसिद्ध महान इतिहासकार और दार्शनिक माने जाते हैं, दूसरे थे एक चर्च नेता रेवेण्ड जाबेज थामस सुडरलैण्ड।

विल डुरंट के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि उनके द्वारा लिखित ग्यारह खण्डों वाली 'दि स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन' श्रृंखला है, जो उन्होंने अपनी पत्नी एरियल के साथ मिलकर लिखी है। विल और एरियल को सन् 1968 में जनरल नॉन-फिक्शन के लिए पुलित्जर पुरस्कार मिला।

विल डुरंट की दूसरी लोकप्रिय रचना 'दि स्टोरी ऑफ फिलास्फी' सामान्य व्यक्ति तक दर्शन को पहुंचाती है।

सन् 1896 में अपनी पहली भारत यात्रा के दौरान सुंडरलैण्ड न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे और बंगाली राष्ट्रवादी सुरेन्द्रनाथ बनर्जी से मिले। वह पहले अमेरिकी थे जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में भाग लिया।

मुझे स्मरण आता है कि लगभग 1945 में मैंने उनकी एक सशक्त पुस्तक 'इण्डिया इन बांडेज' पढ़ी थी। गांधीजी और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें कृतज्ञता भरे पत्र लिखे थे। ब्रिटिश सरकार ने इस पुस्तक को भारत में प्रतिबंधित कर दिया था।

अनेक को संभवतया यह पता नहीं होगा कि अठारहवीं शताब्दी में जब अंग्रेज भारत आए तब देश राजनीतिक रूप से कमजोर था लेकिन आर्थिक रूप से धनवान था।

अनेक को संभवतया यह पता नहीं होगा कि अठारहवीं शताब्दी में जब अंग्रेज भारत आए तब देश राजनीतिक रूप से कमजोर था लेकिन आर्थिक रूप से धनवान था।

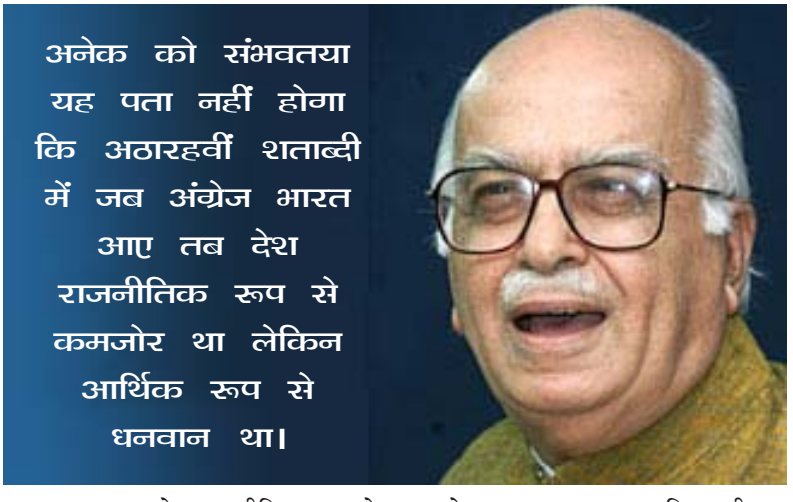

सुंडरलैण्ड ने अपनी उपरोक्त पुस्तक में इस सम्पदा के बारे में लिखा जोकि हिन्दुओं ने व्यापक और विभिन्न उद्योगों से सृजित की थी।

"भारत, यूरोप के किसी या एशिया के किसी अन्य देश की तुलना में एक महानतम औद्योगिक और उत्पादक राष्ट्र था। इसका टेक्सटाइल सामान-इसके लूम से उत्पादित बेहतर उत्पादन, कॉटन, वूलन, लीनन और सिल्क-सभ्य विश्व में प्रसिद्ध थे: इसी प्रकार इसकी आकर्षक ज्वैलरी और प्रत्येक प्रिय आकार में उसके बहुमूल्य नग: उसी प्रकार पोट्री, पोरसेलिन्स, सिरेमिक्स-सभी प्रकार के, गुणवत्ता, रंग और सुंदर आकार में: उसी प्रकार धातु में इसका उत्तम काम-लौह, स्टील, चांदी, और सामान में। इसका महान वास्तु-दुनिया के किसी अन्य के बराबर सुंदर। इसका महान इंजीनियर काम। इसके पास महान व्यापारी, व्यवसायी, बैंकर और फाइनेंसर्स। यह न केवल पानी के जहाज बनाने वाला महान राष्ट्र था अपितु सभी ज्ञात सभ्य देशों के साथ इसका विशाल व्यावसायिक और व्यापारिक सम्बन्ध था। ऐसा भारत अंग्रेजों ने अपने आगमन पर पाया।"

हालांकि, बाद में मुझे विलियम डुरंट द्वारा 1930 में लिखित पुस्तक 'दि केस फॉर इण्डिया' देखने को मिली, लेकिन कई दशकों तक यह उपलब्ध नहीं थी। मुंबई के स्ट्रांड बुक स्टॉल और इसके संस्थापक टी. एन. शानबाग ने इन्फोसिस के मोहनदास पई से डुरंट की इस पुस्तक की फोटो कॉपी लेकर 2007 में पुन: प्रकाशित कर इतिहास की उत्कृष्ट सेवा की है।

'दि केस फॉर इण्डिया' की प्रस्तावना में डुरंट लिखते हैं:

"एक ऐसे व्यक्ति जिसके सांस्कृतिक इतिहास को समझने के लिए मैं भारत गया ताकि दि स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन लिख सकूं''

लेकिन मैंने भारत में ऐसी चीजें देखी कि मुझे महसूस हुआ कि मानवता के पांचवें हिस्से वाले लोगों-जो गरीबी और दमन से इस कदर कुचले हुए थे जैसे कि धरती पर कहीं अन्य नहीं है, के बारे में अध्ययन और लिखना बेमानी है। मैं डरा हुआ था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि किसी सरकार के लिए अपने नागरिकों को ऐसे कष्टों के लिए छोड़ना भी संभव होगा।

"मैं वर्तमान भारत और उसके समृद्ध अतीत का अध्ययन करने के संकल्प के साथ आया: इसकी अद्वितीय क्रांति जो पीड़ाओ के साथ लड़ी गई लेकिन कभी वापस नहीं आई के बारे में और सीखने के: आज के गांधी और बहुत पहले के बुद्ध के बारे में पढ़ने के लिए। और जितना ज्यादा मैं पढ़ता गया मैं विस्मय और घृणा के साथ-साथ क्रोध से भी भरता गया यह जानकर कि डेढ़ सौ साल में इंग्लैण्ड द्वारा भारत को जानबूझकर लहूलुहान किया गया है। मैंने यह महसूस करना शुरु किया कि मैं सभी इतिहास के सर्वाधिक बड़े अपराध को देख रहा हूं।"

डुरंट ने सुंडरलैण्ड के विस्तृत रूप से संदर्भ दिया है और कहा कि "जिन्होंने हिन्दुओं की अकल्पनीय गरीबी और मनोवैज्ञानिक कमजोरी को देखा आज मुश्किल से विश्वास करेगा कि यह अठारहवीं शताब्दी के भारत की सम्पदा थी जिसने इंग्लैण्ड और फ्रांस के पेशेवर समुद्रीय लुटेरों को इसकी तरफ आकर्षित किया था।"

डुरंट कहते हैं कि यही वह दौलत थी जिसे ईस्ट इण्डिया कम्पनी हथियाने को आतुर थी। 1686 में पहले ही ईस्ट इंडिया कम्पनी के निदेशकों ने अपने इरादे जाहिर कर दिए थे। सदा-सर्वदा के लिए "भारत में एक विशाल, सुव्यवस्थित अंग्रेज अधिपत्य स्थापित करने हेतु।"

सन् 1757 में रॉबर्ट क्लाइव ने प्लासी में बंगाल के राजा को हराया और अपनी कम्पनी को भारत के इस अमीर प्रांत का स्वामी घोषित किया। डुरंट आगे लिखते हैं: क्लाइव ने धोखाधड़ी और संधियों का उल्लंघन कर, एक राजकुमार को दूसरे से लड़ाकर, और खुले हाथों से घूस देकर तथा लेकर-क्षेत्र को और बढ़ाया। कलकत्ता से एक पानी के जहाज के माध्यम से चार मिलियन डॉलर भेजे गए। उसने हिन्दू शासकों, जो उसके और उसकी बंदूकों पर आश्रित थे, से 1,170,000 डॉलर 'तोहफे' के रुप में स्वीकार किए: इसके अलावा 1,40,000 डॉलर का वार्षिक नजराना था: ने अफीम खाई जिसकी जांच हुई और संसद ने उन्हें माफ कर दिया, और उसने अपने को खत्म कर लिया। वह कहते हैं "जब मैं उस देश के अद्‌भुत वैभव के बारे में सोचता हूं और तुलनात्मक रूप से एक छोटा सा हिस्सा जो मैंने लिया तो मैं अपने संयम पर अचम्भित रह जाता हूं।" यह निष्कर्ष था उस व्यक्ति का जो भारत में सभ्यता लाने का विचार रखता था।

"मैं वर्तमान भारत और उसके समृद्ध अतीत का अध्ययन करने के संकल्प के साथ आया: इसकी अद्वितीय क्रांति जो पीड़ाओ के साथ लड़ी गई लेकिन कभी वापस नहीं आई के बारे में और सीखने के: आज के गांधी और बहुत पहले के बुद्ध के बारे में पढ़ने के लिए। और जितना ज्यादा मैं पढ़ता गया मैं विस्मय और घृणा के साथ-साथ क्रोध से भी भरता गया यह जानकर कि डेढ़ सौ साल में इंग्लैण्ड द्वारा भारत को जानबूझकर लहूलुहान किया गया है।

भारत-विश्लेषक अक्सर भारत की जाति-व्यवस्था के बारे में काफी अपमानजनक ढंग से बात करते हैं। हालांकि विल डुरंट जातिवादी उपमा को भारत पर ब्रिटिश आधिपत्य को सभी इतिहास में सर्वाधिक बड़े अपराध की अपनी निंदा को पुष्ट करने के रुप में करते हैं।

"दि कॉस्ट सिस्टम इन इंडिया'' उपशीर्षक के तहत डुरंट लिखते हैं:

"भारत में वर्तमान वर्ण व्यवस्था चार वर्गों से बनी है: असली ब्राह्मण है ब्रिटिश नौकरशाहीय, असली क्षत्रिय है ब्रिटिश सेना, असली वैश्य है ब्रिटिश व्यापारी और असली शूद्र तथा अस्पृश्य हैं हिन्दू लोग।''

पहली तीन जातियों के बारे में निपटने के बाद लेखक लिखता है:

"भारत में असली वर्ण व्यवस्था का अंतिम तत्व अंग्रेजों द्वारा हिन्दुओं के साथ सामाजिक व्यवहार है। अंग्रेज जब आए थे तब वे प्रसन्न अंग्रेजजन थे, सही ढंग से व्यवहार करने वाले भद्रपुरुष लेकिन उनके नेताओं के उदाहरण तथा गैर-जिम्मेदार शक्ति के जहर से वह शीघ्र ही इस धरती पर सर्वाधिक घमण्डी तथा मनमानी करने वाली नौकरशाही में परिवर्तित हो गए। 1830 में संसद को प्रस्तुत एक रिपोर्ट कहती है कि "इससे ज्यादा कुछ आश्यर्चजनक नहीं हो सकता कि जो लोग परोपकारी उद्देश्यों से सक्रिय थे। वे भी व्यवहारतया तिरस्कार के लक्ष्य बन रहे थे।'' सुंडरलैण्ड रिपोर्ट करते हैं कि ब्रिटिश हिन्दुओं को भारत में अजनबी और विदेशियों के रूप में इस ढंग से मानकर व्यवहार करते थे जैसे प्राचीन काल में जार्जिया और लुसियाना में अमेरिकी दासों के साथ 'असहानुभूतिपूर्वक' कठोर और प्रताड़ित ढंग से किया जाता था।''

डुरंट ने गांधी जी को उद्धृत करते कहा कि जिस विदेशी व्यवस्था के तहत भारत पर शासन चलाया जा रहा था, उसने भारतीयों को 'कंगाली और निर्बलता' में सिमटा दिया।

डुरंट टिप्पणी करते हैं "1783 की शुरुआत में एडमण्ड बुर्के भविष्यवाणी करता है कि इंग्लैण्ड को भारतीय संसाधनों की वार्षिक निकासी बगैर बराबर की वापसी के

वास्तव में भारत को नष्ट कर देगी। प्लासी से वाटरलू के सत्तावन वर्षों में भारत से इंग्लैण्ड को भेजी गई सम्पत्ति का हिसाब ब्रुक एडम्स् ने ढाई से पांच बिलियन डॉलर लगाया था। इससे काफी पहले मैकाले ने सुझाया था कि भारत से चुरा कर इंग्लैण्ड भेजी गई दौलत मशीनी आविष्कारों के विकास हेतु मुख्य पूंजी के रुप में उपयोग हुई और इसी के चलते औद्योगिक क्रांति संभव हो सकी।''

विल डुरंट ने अपनी पुस्तक "दि केस फॉर इण्डिया'' सन् 1930 में लिखी। जब कुछ समय बाद यह रवीन्द्रनाथ टैगोर के ध्यान में आई तो उन्होंने मार्च, 1931 के मॉडर्न रिव्यू में एक लेख लिखकर विल डुरंट को गर्मजोशी भरी बधाई दी, और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा "जब मैंने विल डुरंट की पुस्तक में उन लोगों के बारे में जो उनके सगे सम्बन्धी नहीं थे, के दर्द और पीड़ा के बारे में मर्मस्पर्शी नोट देखा तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। मैं जानता हूं कि लेखक की अपने पाठकों से लोकप्रियता पाने का एक छोटा मौका मिलेगा और उनकी पुस्तक को हमारे लिए निषिद्ध करने का जोखिम बना रहेगा, विशेषकर उन लोगों के विरुद्ध अस्वाभाविक निन्दा करने की धृष्टता के बगैर भी अपने दुर्भाग्य से प्रताड़ित हो रहे हैं। लेकिन मैं निश्चिंत हूं कि उनके पास पश्चिम में स्वतंत्रता और निष्पक्षता की पैरोकारी की बेहतरीन व्यवस्था का परचम उठाए रखने के रूप में अनुपम पारितोषिक मिलेगा।''

पश्च्यलेख (टेलपीस)

विलियम डुरंट और एरियल डुरंट विद्वत्ता के साथ-साथ प्रेम कहानी में भी सहभागी थे। अक्टूबर, 1981 में विलियम बीमार पड़े और उन्हें अस्पताल ले जाया गया। उनके अस्पताल में भर्ती होने के बाद से एरियल ने खाना त्याग दिया। 25 अक्टूबर को उनकी मृत्यु हो गई। जब विलियम को एरियल की मृत्यु के बारे में ज्ञात हुआ तो वह 7 नवम्बर को चल बसे। ■

(लेखक भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष हैं।)

सुशासन से अल्पसंख्यकों का दिल जीतें : नितिन गडकरी

गत 12 जुलाई को एक प्रेस वक्तव्य में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने हज कमेटी, भाजपा और एनडीए शासित राज्यों सभी में वक्फ बोर्ड, मदरसा बोर्ड और माइनारिटी फाईनेंसियल कार्पोरेशनों के सदस्यों से अपील की है कि वे सुशासन के माध्यम से अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों की दिल जीतें। वह सुशासन के माध्यम से अल्पसंख्यक कल्याण पर आयोजित एक दिन की कार्यशाला को सम्बोधित कर रहे थे जिसमें भाजपा शासित राज्यों से अल्पसंख्यक सम्बन्धित निकायों के पदाधिकारी शामिल हुए। भाजपा के सुशासन प्रकोष्ठ के संयोजक श्री जगदीश मुखी ने इस कार्यशाला की अध्यक्षता की। अपने किस्म की इस पहली कार्यशाला में कुल मिलाकर लगभग 100 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इन प्रतिनिधियों में क्रिश्चियन समुदाय के लोग भी शामिल हुए। श्री गडकरी ने अल्पसंख्यकों, विशेष रूप से मुस्लिम समुदाय के लोगों के हालात पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि पिछले 65 वर्षों में कांग्रेस ने मुस्लिमों के आर्थिक एवं सामाजिक हालात को ऊंचा बनाने में कुछ भी नहीं किया है।

उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि कांग्रेस ने सदा ही मुस्लिमों को मात्र एक वोट बैंक माना है और उन्हें एक आटोमोबाइल गैराज, कबाड़ी की दुकान या कसाई की दुकान से अधिक कुछ नहीं समझा है। हम इस स्थिति को एकदम बदल देना चाहते हैं और राष्ट्रीय विकास सभी समुदायों का बराबर का भागीदार बनाना चाहते हैं। श्री गडकरी ने आगे कहा कि 'अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक' विभाजन कृत्रिम है और हम सभी हमारी मातृभूमि के सच्चे बेटे हैं। याद रखिए कि हमारी पार्टी 'राष्ट्र-प्रथम' को मानने वाली पार्टी है।

श्री गडकरी ने यह भी कहा कि भाजपा-शासित राज्य सभी ढंग से अच्छा कार्य कर रहे हैं, जिसमें विशेष रूप से निर्धनता-उन्मूलन शामिल है। उन्होंने कहा : ''किन्तु, हमें समाज के सभी वर्गों तक पहुंच बनाने का विशेष प्रयास करना है और उन तक हमारी सरकारों द्वारा किए जा रहे अच्छे कामों तक पहुंचाना है।'' उन्होंने यह भी अपील की कि पार्टी द्वारा नियुक्त सभी पदाधिकारियों को अपनी भूमिका के बारे में एकदम स्पष्ट होना होगा और हर ढंग से पार्टी के अच्छे कामों को लोगों तक पहुंचाना चाहिए। भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष श्री तनवीर अहमद, भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य डॉ. विनय सहस्रबुद्धे और भाजपा मोर्चा/प्रकोष्ठ समन्वयक श्री महेन्द्र पाण्डे ने भी इस अवसर पर प्रतिनिधियों को सम्बोधित किया। इसके बाद वक्फ सम्पत्ति के प्रभावकारी प्रबंधन पर आयोजित सत्र में चर्चा हुई। ■

राष्ट्रीय पार्टियों का महत्व कम नहीं होगा

अरुण जेटली

> **सरकार में प्रधानमंत्री का नेतृत्व प्रेरणाहीन दिखाई पड़ता है। अर्थव्यवस्था का प्रबंधन यूपीए-II सरकार की सबसे बड़ी विफलता है, इसमें भ्रष्टाचार सम्बन्धी घपले घोटालों को जोड़ दिया जाए तो इससे सत्ता में बैठी पार्टी की विश्वसनीयता खत्म हो जाती है।**

gkल में हुए विधान सभाओं, स्थानीय निकायों के चुनावों या उप-चुनावों में जिस तरह का रुख देखने को मिला है, उससे स्पष्ट हो जाता है कि कांग्रेस की लोकप्रियता घटती चली जा रही है। सरकार में प्रधानमंत्री का नेतृत्व प्रेरणाहीन दिखाई पड़ता है। अर्थव्यवस्था का प्रबंधन यूपीए-II सरकार की सबसे बड़ी विफलता है, इसमें भ्रष्टाचार सम्बन्धी घपले घोटालों को जोड़ दिया जाए तो इससे सत्ता में बैठी पार्टी की विश्वसनीयता खत्म हो जाती है। जब भी पार्टी मुसीबत में होती है तो कांग्रेस अपने प्रथम परिवार की तरफ झुकने की आदी हो गई है। ऐसी पार्टी जो किसी परिवार की भीड़ से घिरी होती है, उनमें एक बहुत बड़ी बाधा खड़ी हो जाती है। जब इस प्रकार के परिवार की एक खास पीढ़ी सत्ता में अक्षम रहती है तो पार्टी भी मृतप्राय: बन जाती है। ये सभी बातें कांग्रेस को अगले आम चुनावों के सम्बन्ध में परेशानी में डालने वाली हैं।

साथ ही, क्षेत्रीय पार्टियां कहीं ज्यादा दबंग होती जा रही हैं। रूझान बताते हैं कि भारत की अगली संसद में इनका महत्वपूर्ण भाग बनेगा। इससे एक बहस भी खड़ी हो गई है कि क्या सामान्यत: माना जाने वाला तीसरा मोर्चा, जिसे इस बार फेडरल फ्रंट का नाम दिया गया है, सत्ता के लिए एक सशक्त दावेदार बनकर उभर पाएगा? कुछ लोग तो यह सवाल भी पूछने लगे हैं कि क्या राष्ट्रीय पार्टियां प्रमुख भूमिकाओं से हट कर कहीं समर्थनकारी भूमिकाएं तो निभाने नहीं लगेंगी?

लगता यह है कि किसी एक पार्टी को बहुत बड़ा बहुमत मिलने का युग समाप्त हो गया है। किन्तु इससे यह कयास लगाने का कोई कारण नहीं है कि सरकार बनाने में राष्ट्रीय पार्टियों की भूमिका का ह्रास होता चला जाएगा। अपने ही दम पर पहले चार दशकों में भारी बहुमत प्राप्त करने की कांग्रेस की स्वाभाविक क्षमता 1990 के दशक में समाप्त हो गई। 1996, 1998 और 1999 में भाजपा ही सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभर कर आई। 2004 में, कांग्रेस को भाजपा से केवल सात सीट ही अधिक मिल पाई। 2009 में राज्यों में बेहतर गठबंधन और राजनीतिक स्थिरता की लोकप्रिय इच्छा के कारण इसका प्रमुख प्रभाव बढ़ता चला गया।

परन्तु 2009 से यूपीए ने एक प्रभावहीन शासन प्रदान किया। अत: प्रत्येक राज्य में गैर-कांग्रेसी सकारों की प्रमुख राजनैतिक पार्टी को हाल के चुनावों में स्वाभाविक लाभ मिला। अभी तक ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता है कि इस प्रकार के रुख में कोई तब्दीली आएगी। अगली लोकसभा में कांग्रेस सीटों की संख्या बुरी तरह से कम होने की संभावना दिखाई पड़ती है।

अभी तक तीसरे मोर्चा फार्मूला को तीन बार आजमाया जा चुका है। हर बार, कांग्रेस ने समर्थन देकर चरण सिंह, चन्द्रशेखर और युनाइटेड फ्रंट के एच.डी. देवगौड़ा और आई.के. गुजराल को प्रधानमंत्री बनाया। इनमें से कोई भी अपने पद पर एक वर्ष का कार्यकाल भी पूरा नहीं कर पाया। कांग्रेस ने इनका एक 'स्टॉप-गैप अरेंजमेंट' की तरह इस्तेमाल किया और फिर जब भी कांग्रेस को अपना लाभ दिखाई दिया तो चुनाव करा दिए। चाहे तीसरे मोर्चे को जिस भी नाम से पुकारा जाए, उसका विचार मात्र ही विफलता का द्योतक है।

पारम्परिक रूप से तीसरे मोर्चे के मूल विचार में वामपंथी और समाजवादी पार्टी आती हैं। 2008 में न्यूक्लियर बहस और हाल में राष्ट्रपति चुनावों के दौरान विश्वास मत के दोनों अवसरों पर समाजवादी पार्टी कांग्रेस के आगे झुक गई क्योंकि इसके नेता भ्रष्टाचार के मामलों में फंसे थे। भ्रष्ट को दबाया जा सकता है और उन्हें आसानी से अपनी तरफ लाया जा सकता है, कांग्रेस ने समाजवादी पार्टी और बसपा के प्रबंधन में इसे कर दिखाया है। ईमानदार ज्यादा उद्दंड हो सकते हैं। इस बारे में तृणमूल कांग्रेस की उद्दंडता सामने है। समाजवादी पार्टी की कमजोरी ने तीसरे मोर्चे की विचार मात्र को ही बुरी तरह आहत कर दिया है।

वामपंथी असमंजस में है। इनका राजनैतिक आधार कुछ राज्यों से आगे नहीं बढ़ पाया है। केरल में सरकार कभी वामपंथी तो कभी कांग्रेस की बनती रहती है। तीन दशकों से पश्चिम बंगाल में कोई विकल्प नहीं था। पश्चिम बंगाल में वामपंथियों ने सीटें जीत कर संसद में अपनी प्रमुख उपस्थिति बनाई। परन्तु, अब वहां एक प्रभावकारी विकल्प है। अत: संसद में जिन सीटों पर वामपंथी बैठे हैं, उसकी निर्भरता तृणमूल कांग्रेस में समा गई है।

बसपा को तो अभी अपने पत्ते खोलने हैं। सुप्रीम कोर्ट ने अत्यंत विवादास्पद और तकनीकी आधार पर बसपा की नेता मायावती

के खिलाफ जांच को समाप्त कर दिया है। अभी पता नहीं है कि क्या बसपा कांग्रेस के प्रति चिरंतन आभार व्यक्त करती रहेगी या वह कांग्रेस के शिकंजे से मुक्त हो जाएगी। इस प्रश्न का उत्तर अभी तक मालूम नहीं है।

अधिकांश क्षेत्रीय पार्टियां गठबंधनों का भाग है। ये क्षेत्रीय पार्टियां भी राष्ट्रीय पार्टियों की तरह परिपक्व हैं। इन बहुत सी क्षेत्रीय पार्टियों के बीच एक बात जो सामान्य सूत्र के रूप में जुड़ी है, वह यह है कि राज्यों में उनकी राजनैतिक लड़ाई कांग्रेस के साथ है। उनके लिए कांग्रेस का समर्थन करना या कांग्रेस पर निर्भर रहना, भविष्य में उनके अपने आधार को संकुचित कर सकता है। और उनकी बड़ी से बड़ी सफलता पर इन क्षेत्रीय पार्टियों को काफी सीटों का लाभ हो सकता है, परन्तु, वह भी केवल एक राज्य में और मुझे शायद ही कोई ऐसा राज्य मिले जहां उन्हें 30 सीटों से ज्यादा मिली हों। उनके पास सत्ता संतुलन तो रहता है और वे तय कर सकती है कि कौन सत्ता में आएगा। परन्तु ऐसी बहुत सी क्षेत्रीय पार्टियां है जो एक ही तरफ नहीं रह सकती हैं, डीएमके और एआईएडीएमके, टीडीपी और वाइएसआर कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और बसपा सामान्यतया एक तरफ नहीं रहती हैं। क्षेत्रीय ब्लॉक में सभी पार्टियां एक ही समय में एक ही मेज पर नहीं बैठ सकती हैं। ज्यादा से ज्यादा उनमें से कुछ में ही ऐसा हो सकता है। भविष्य में समाजवादी पार्टी और वामपंथियों को स्वयं यह विश्वास नहीं है कि किस की तरफ होंगे, जिससे उनके आतंरिक मतभेद उजागर हो जाते हैं। क्योंकि इनमें से कोई भी पार्टी अधिकांश अलग-अलग राज्यों में सीटें जीतने की क्षमता नहीं रखती है, जिससे क्षेत्रीय पार्टियां केन्द्र में सत्ता का दावा करने के लिए राष्ट्रीय पार्टियों के दावे को कम कर देने की बात गलत दिखाई देने लगती है।

कांग्रेस के ह्रास और कुछेक क्षेत्रीय पार्टियों की विपक्षी विश्वसनीयता में कमी इस बात का निश्चित निष्कर्ष निकलता है कि केवल एनडीए ही विकल्प हो सकता है। एनडीए में हम लोगों के लिए, 1996 से 1998 में गठबंधन में अटलजी का प्रबंधन सबक याद करने वाला है। 18 महीने में, तीन पार्टियों वाला एनडीए 24 पार्टियों का गठबंधन बन गया था। आज विफल यूपीए के विकल्प के रूप में एनडीए को एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका निभानी है। एनडीए को विभिन्न क्षेत्रों से पारम्परिक गैर-कांग्रेसी पार्टियों को मिलाने के लिए स्वयं को लचीला बनाना होगा। आज भारत गठबंधन राजनीति के युग में जी रहा है। अत: आवश्यक है कि गठबंधन का केन्द्रबिन्दु के दायरे को बढ़ाना होगा। ■

(लेखक राज्यसभा में विपक्ष के नेता हैं)

(आउटलुक पत्रिका से साभार)

असंगठित कामगारों का सशक्तिकरण विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न

Hkkरतीय जनता मजदूर महासंघ द्वारा 21 जुलाई 2012 को कांस्टिट्यूशन क्लब रफी मार्ग में एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। विषय था- असंगठित कामगारों का सशक्तिकरण एवं बैंकिंग अधिकारियों का योगदान। बैठक के मुख्य अतिथि श्री विजय गोयल, राष्ट्रीय महासचिव भाजपा ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया एवं श्री भगत सिंह कोशियारी जी, सांसद राज्यसभा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा एवं चेयरमैन पिटिशन कमिटी ने कार्यक्रम का समारोप किया। बैठक

की अध्यक्षता महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रहलाद पटेल जी ने किया एवं कार्यक्रम के संयोजक श्री आनंद साहु ने कार्यक्रम का संचालन किया।

श्री विजय गोयल ने केनरा बैंक के देशभर से आये कांट्रेक्च्युअल अधिकारियों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी नौजवान साथियों का हम पूरा सहयोग करेंगे। जिससे कि आप सभी का स्थायीकरण केनरा बैंक में हो सके जैसाकि आदरणीय श्रीमती सुषमा स्वराज के प्रयास से एसबीआई के 24,500 कांट्रेक्च्युअल अधिकारियों का स्थायीकरण हो गया।

श्री भगतसिंह कोशियारी जी ने कहा कि हम सब भी असंगठित कामगारों की भांति हैं जिनका सबसे अधिक अस्थायी रोजगार व्यवस्था है आज हम सांसद हैं कल क्या होगा वह नहीं जानते।

श्री प्रहलाद पटेल ने कहा कि जब केनरा बैंक कांट्रेक्च्युल ओफिर्सस एशोसिएशन ने भारतीय जनता मजदूर महासंघ से सम्बद्धता ले ली है तब से हमारा दायित्व है कि हम आप सभी के लिए तत्परता से लड़ाई लड़ें। हम जल्द ही बैंक को इस संबंध में पत्र भेजेंगे।

श्री एम.के गौड़, डिप्टी लेबर कमीशन, दिल्ली सरकार ने सम्मेलन में ठेका मजदूरों के बारे में कानूनी जानकारी देते हुए कहा कि चाहे मजदूर हों अथवा अधिकारी जब 'कान्ट्रेक्ट' में कार्यरत हैं और स्थायी कार्य के लिए कार्य कर रहे हैं तब उन्हें बैंक को अथवा कोई कम्पनी स्थायीकरण करना आवश्यक होता है। ■

युवा नेतृत्व विकसित करना भाजपा की परंपरा : धर्मेन्द्र प्रधान

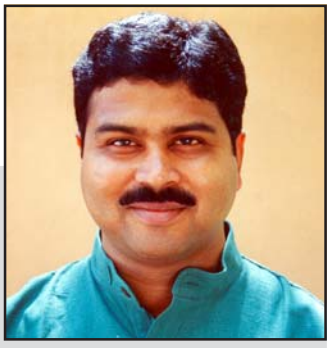

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव और राज्यसभा सांसद श्री धर्मेन्द्र प्रधान पार्टी के जुझारू एवं कर्मठ युवा नेता हैं। अ.भा.वि.प. से अपने सार्वजनिक जीवन की शुरूआत करने वाले श्री प्रधान ने कई तरह की जिम्मेदारियों का दायित्व निभाया है, जिसमें भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा संसद सदस्य और पार्टी के राष्ट्रीय सचिव शामिल हैं। संगठन में अपनी स्पष्टवादिता और दूरदर्शिता के लिए प्रसिद्ध श्री प्रधान ने बड़ी सफलतापूर्वक कई चुनौतियों का सामना किया है। नई दिल्ली में कमल संदेश संपादक मंडल सदस्य श्री राम प्रसाद त्रिपाठी ने श्री प्रधान से बातचीत की, जिसमें उन्होंने कहा कि भाजपा कांग्रेस-नीत यूपीए को उखाड़ फेंकने के लिए पूरी तरह तैयार है। पार्टी सम्बन्धी कई अन्य मामलों पर भी वे बेबाक बोले। प्रमुख अंश प्रस्तुत हैं:

बिहार के पिछली विधानसभा चुनावों में भाजपा के असाधारण प्रदर्शन की रणनीति तैयार करने का श्रेय आपको जाता है। किंतु, बिहार में भाजपा-जद(यू) की ऐतिहासिक विजय के बाद भाजपा को जीती गई सीटों के मुकाबले कम मंत्रीपद दिए गए। हाल ही में कुछ जद(यू) नेताओं ने तो भाजपा नेतृत्व के खिलाफ कठोर वक्तव्य भी दिए। बिहार भाजपा के सह-प्रभारी होने के नाते इन घटनाओं को आप किस रूप में देखते हैं।

बिहार में, भाजपा-जद(यू) गठबंधन सीटों और मंत्रिमंडलीय उत्तरदायित्वों के आवंटन के बारे में उसी फार्मूले पर चल रहा है जो पिछली बार तय हुआ था। भाजपा अपनी नीतियों पर चल रही है और जद(यू) अपनी नीतियों पर काम कर रही है, परन्तु दोनों पार्टियों के सामने मिलजुल कर काम करते हुए बिहार का विकास मुख्य लक्ष्य रहता है। दोनों पार्टियों के बीच कम से कम मतभेद हों, यही दोनों के लिए हितकर है। जद(यू), भाजपा का पुराना सहयोगी है। दोनों ने मिल कर संसद के चार आम चुनाव और राज्यविधान सभा के पांच चुनाव लड़े हैं। बिहार के मुख्यमंत्री बेहतर प्रशासन देने की कोशिश करते रहे हैं और भाजपा उन्हें सक्रिय रूप से अपना समर्थन दे रही है। मेरा विश्वास है कि यह गठबंधन सफलतापूर्वक चलता रहेगा और कुछ अनचाहे प्रकार के वक्तव्यों से लम्बे समय से चले आ रहे दोनों पार्टियों के सम्बन्धों पर कोई आंच नहीं आएगी।

माना जाता है कि भाजपा के मंत्रीगण उत्कृष्ट कार्य प्रदर्शन कर रहे हैं जिससे बिहार में एनडीए सरकार की छवि को उज्ज्वल बनाने में मदद मिली है। परन्तु, ऐसा भी कुछ महसूस किया जा रहा है कि इस पूरे प्रशंसनीय कार्य के लिए पूरा का पूरा श्रेय जद(यू) ले रहा है। क्या आप समझते हैं कि भाजपा के मंत्रियों के अपने काम के अनुसार उन्हें आवश्यक श्रेय मिल रहा है?

इसमें जरा भी संदेह नहीं है कि बिहार में भाजपा के मंत्री बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। यदि भाजपा को श्रेय नहीं मिलता तो वह कभी भी बिहार के विधान सभा चुनावों में लड़ी 102 सीटों में से 91 सीटें न जीत पाती। राजनीति में मान्यता अथवा अस्वीकृति का आकलन केवल चुनावी परिणामों से ही लगाया जा सकता है। पिछले चुनावों में भाजपा ने बहुत अच्छा कार्य करके दिखाया और ऐतिहासिक विजय दर्ज की। इसे देखते हुए, यह कैसे कहा जा सकता है कि भाजपा के मंत्रियों को उनके अच्छे काम के लिए श्रेय नहीं मिलता है?

क्या राजनीति में गठबंधन, स्थिरता और सुशासन में बाधक होती हैं?

आज की स्थिति में, गठबंधन एक वास्तविकता है और भारत में इसका चलते रहना भी निश्चित ही है। राजनीति में बहुविविधता को देखते हुए, इस समय गठबंधन सरकार निर्माण के काम में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यदि गठबंधन सहयोगियों में पारम्परिक विश्वास और समझ बनी रहती है तो निश्चित ही विकास संभव होता है। अत:, मेरा मानना है कि व्यापक वैचारिक ढांचे के साथ समझौता किए बिना गठबंधन सुशासन प्रदान कर सकता है और हमने देखा है कि अटलजी ने छह वर्ष तक शासन करके स्थिरता और विकास के साथ गठबंधन चलाने का सफलतापूर्वक काम करने का बेहतर उदाहरण हमारे सामने रख चुके हैं।

कर्नाटक देश का पहला दक्षिणी राज्य है जहां भाजपा-नीत सरकार चुनी गई। आप कर्नाटक प्रदेश में भाजपा प्रभारी भी हैं। हाल की घटनाओं के संदर्भ में, क्या पार्टी फिर से 2013 में अपना प्रदर्शन दोहरा पाएगी?

कर्नाटक में, भाजपा संगठन बहुत मजबूत है और यह वहां किसी भी प्रकार की चुनौती का सामना कर सकती है और कठिन परिस्थितियों से फिर से लौटने में सफल रहेगी। भाजपा अब भी कर्नाटक के लोगों

की प्रथम पसंद है क्योंकि कर्नाटक में भाजपा सरकार का बुनियादी स्वरूप ही सुशासन, गरीबों की हितवादी नीतियों और लोगों के समर्थन का आधार है। वास्तव में, 2008 में पिछले विधान सभा चुनावों के बाद अब तक जितने भी चुनाव हुए, उनमें प्रत्येक चुनाव में लोगों ने अपना विश्वास भाजपा में जताया है। अत: मेरा दृढ़विश्वास है कि पार्टी को 2013 में फिर जनादेश प्राप्त होगा।

आप भारतीय जनता युवा मोर्चा (भाजयुमो) के प्रभारी हैं। क्या आप समझते हैं कि भाजपा पार्टी में युवा नेताओं को तैयार करने में पर्याप्त कदम उठाए हैं?

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लगभग 50 वर्ष के हैं। पार्टी के सभी राष्ट्रीय महासचिव भी लगभग 40 और 50 वर्ष के बीच के हैं। पार्टी के अधिकांश सांसद और विधायक भी युवा हैं। पार्टी के अधिकांश कार्यकर्ता देश के युवाओं का प्रतिनिधित्व करता है। अत:, मैं मानता हूं कि भाजपा युवा लोगों की पार्टी है। युवा नेतृत्व को मान्यता और बढ़ावा देना भाजपा की परम्परा रही है। यह इस बात से स्पष्ट है कि अटलजी, आडवाणी जी, जोशी जी, नायडूजी, राजनाथ सिंह जी और गडकरी जी ने पार्टी का नेतृत्व उस समय किया जब वे अपने राजनैतिक जीवन में अपेक्षतया युवा वय के थे।

आज भारत का युवा बढ़ते भ्रष्टाचार, महंगाई, आर्थिक मंदी और बेरोजगारी से कुंठित है। भाजपा किस प्रकार से भारत के युवाओं के सम्बन्ध इन मुद्दों को सुलझाने के लिए योजना तैयार कर रही हैं क्योंकि हमारी आबादी का दो-तिहाई भाग इन युवाओं का है?

आज के बदलते समय में, भाजपा ने सदा ही अपने नेतृत्व और युवावर्ती कार्यक्रमों के माध्यम से उन राज्यों में उनकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने की कोशिश की है जहां भाजपा की सरकार है। उदाहरण के लिए अटलजी की एनडीए सरकार ने सभी क्षेत्रों में भारी संख्या में रोजगार प्रदान करने पर बल दिया था और भारत के विकास मॉडल में इफ्रास्ट्रक्चर का ढांचा खड़ा किया था। उसी प्रकार अब, भाजपा राज्य सरकारों ने भी रोजगार अवसर प्रदान करने क मामले में वही बेहतर काम किया है। इस तथ्य को विभिन्न एजेंसियों ने उजागर भी किया है जिसे हम चंडीगढ़-स्थित श्रम मंत्रालय के श्रम ब्यूरो द्वारा 2011-12 के लिए जारी हाल की रिपोर्ट में दर्शाया गया है कि भाजपा-शासित राज्यों में रोजगार की स्थिति अच्छी है।

इसके अलावा, भाजपा-नीत राज्य सरकारों के पास न केवल शिक्षित युवाओं के लिए नीतियां बनाई गई हैं, बल्कि देश के ग्रामीण और अकुशल युवाओं पर भी नीतियां तैयार की गई हैं। हाल के वर्षों में युवा गलत आर्थिक नीतियों, महंगाई और भ्रष्टाचार के शिकार हुए हैं। भाजपा मानती है कि युवा महत्वाकांक्षा एक बहुत बड़ी ताकत है और उन्हें पर्याप्त अवसर तथा सुशासन के द्वारा उनकी आकांक्षाएं पूरी करने से पार्टी को भारी जनसांख्यिकीय लाभ मिल सकता है।

डॉ. मनमोहन सिंह की वर्तमान सरकार भ्रष्टाचार और अकुशलता के जाल में फंसी है। उसके कुशासन ने देश के विकास को पटरी से उतार दिया है। महंगाई और मुद्रास्फीति से आम आदमी की कमरतोड़ कर रख दी है। क्या आप समझते हैं कि भाजपा देश के लोगों तक यह संदेश ले जा सकी है और कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार के असली चेहरे को बेनकाब करने के लिए भाजपा की क्या योजना है?

हम लोगों के सामने अटलजी की एनडीए सरकार और भाजपा-शासित राज्यों के सुशासन को सामने रखेंगे। उदाहरण के लिए, कर्नाटक और मध्यप्रदेश में किसानों को शून्य प्रतिशत पर ऋण देने, गुजरात में त्वरित चहुंमुखी विकास का मॉडल, मध्य प्रदेश में लगभग 300 प्रतिशत से ज्यादा का गेहूं उत्पादन, छत्तीसगढ़ में न केवल दो अंकों में दो गुनी विकास दर के अलावा सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) में कार्यान्वयन मॉडल, गोवा में पेट्रोलियम पदार्थों पर वैट से पूर्णत: मुक्ति और हिमाचल प्रदेश में मानव-विकास की त्वरित गति से बढ़ता विकास जैसी हमारी अनेक सफलताओं को लोगों के सामने रखा जायेगा। बिहार, पंजाब और झारखण्ड में, एनडीए सरकारों ने विकास के मामले में अन्य राज्यों के सामने उदाहरण पेश किए हैं। हम देश के सामने इन विकास मॉडलों को रखेंगे और निश्चित ही लोग यूपीए और एनडीए सरकारों के विकास रिकार्डों के बीच के फर्क को समझेंगे।

इसके अलावा, भाजपा ने बार-बार गरीबों, किसानों, बुनकरों, मछुआरों, मध्य वर्गों और समाज के वंचित वर्गों के मुद्दों को सदैव उठाया है। गोवा, पंजाब के हाल के चुनाव परिणाम और मुम्बई, दिल्ली, मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश के नगरीय निकाय चुनाव परिणामों ने दिखा दिया है कि लोग भाजपा की ओर निहार रहे हैं। पिछले तीन वर्षों में, भाजपा के निरंतर महंगाई, भ्रष्टाचार काला धन और भारत में आम आदमी को प्रभावित करने वाले अन्य मुद्दों के खिलाफ लड़ाई लड़ी है और इससे हमें विश्वास है कि हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी का भाजपा के वोट प्रतिशत में 10 प्रतिशत सुधार का लक्ष्य पूरा हो सकेगा।

क्या आप समझते हैं कि क्या भाजपा 2014 में केन्द्र में फिर से सत्ता प्राप्त कर सकेगी?

कांग्रेस सभी मोर्चों पर बुरी तरह से विफल हो चुकी है और यूपीए का ढीला-ढाला कार्य प्रदर्शन पूरे देश के सामने है। आज भी अटलजी का छह वर्ष का सुशासन हर भारतीय के दिलो-दिमाग पर छाया हुआ है। आज देश का युवा भ्रष्टाचार और निष्क्रिय शासन से कुंठित है और लोग परिवर्तन की गहरी इच्छा रखते हैं। ऐसी स्थिति में, भाजपा और एनडीए शासित राज्यों के कार्यकाल का प्रदर्शन से भाजपा में लोगों का विश्वास बढ़ता नजर आता है। दिशाहीन कांग्रेस शासन, यूपीए गठबंधन की कमजोरी, देश में कांग्रेस-विरोधी वातावरण और भाजपा पर लोगों का बढ़ता विश्वास 2014 के आम चुनाव में भाजपा-नीत एनडीए को स्पष्ट बहुमत देगा। ■

49 निकायों में से 36 में भाजपा की शानदार जीत

मध्यप्रदेश में पिछले दिनों हुए महेश्वर उपचुनाव के बाद अब नगरीय निकाय चुनावों में भी भाजपा ने कांग्रेस को जबरदस्त पटखनी दी है। वर्ष 2013 में होने वाले विधानसभा चुनावों के करीब एक साल पहले हुए इन चुनावों में भाजपा ने कांग्रेस के गढ़ों में सेंध लगाते हुए 15 जिलों के 49 निकायों में से 36 पर कब्जा जमा लिया। अगले साल विधानसभा चुनाव में सत्ता प्राप्ति का सपना संजोए बैठी कांग्रेस के हिस्से में अध्यक्ष पद की केवल आठ सीटें ही आ सकीं। यहां तक कि कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष कांतिलाल भूरिया के गृह जिले झाबुआ और केंद्रीय मंत्री कमलनाथ के छिंदवाड़ा में भी कांग्रेस को हार का मुंह देखना पड़ा। बड़वानी निकाय में तो 55 साल में पहली बार भाजपा का अध्यक्ष चुना गया। छह सीटों पर निर्दलियों ने कब्जा जमाया। इन परिणामों से संकेत एक बार फिर साफ हैं कि न तो भूरिया के चलते कांग्रेस का जनजाति कार्ड काम कर सका और न ही भाजपा नेताओं पर कीचड़ उछालने वाली बयानबाजी काम आई।

दो चरणों में हुए नगरीय निकाय चुनावों के पहले चरण में 29 सीटों के चुनाव परिणाम घोषित किए गए, जिनमें भाजपा को 20 तो कांग्रेस को केवल तीन सीटें मिलीं। चार सीटों पर निर्दलीयों ने कब्जा जमाया। दूसरे चरण में 22 नगर पालिकाओं और नगर परिषदों के चुनाव परिणाम घोषित किए गए, जिनमें से 15 भाजपा के हिस्से, पांच कांग्रेस के और दो निर्दलीयों के हिस्से आई। गौरतलब है कि पिछले निकाय चुनावों में भाजपा के खाते में 25, जबकि कांग्रेस के पास 11 सीटें थीं। सात निकाय नए बनाए गए हैं। इनमें पहली बार चुनाव हुए हैं।

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष कांतिलाल भूरिया के संसदीय क्षेत्र रतलाम-झाबुआ और केंद्रीय मंत्री कमलनाथ के संसदीय क्षेत्र छिंदवाड़ा के अलावा राजेंद्र सिंह राजूखेड़ी के क्षेत्र धार, अरुण यादव के बड़वानी (खंडवा), बसोरी सिंह मेश्राम के मंडला-डिंडोरी और राजेश नंदिनी सिंह के अनूपपुर (शहडोल) में कांग्रेस चारों खाने चित हो गई। भूरिया के कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद महेश्वर और जुबेरा में हुए उपचुनावों में भी कांग्रेस का जनजाति कार्ड निष्प्रभावी हो चुका था।

वर्ष 2013 में होने वाले विधानसभा चुनावों के करीब एक साल पहले हुए इन चुनावों में भाजपा ने कांग्रेस के गढ़ों में सेंध लगाते हुए 15 जिलों के 49 निकायों में से 35 पर कब्जा जमा लिया।

मध्यप्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री प्रभात झा ने जीत के बाद कहा कि गांव की जनता ने हमें विश्वास सौंपा है, भाजपा की विचारधारा का सम्मान कर हमें गले लगाया है। भाजपा और राज्य सरकार पूरी प्रतिबद्धता के साथ उसकी सेवा में तत्पर रहेगी। उन्होंने कहा कि हम चुनाव को चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं, जनविश्वास पर खरे उतरते हैं। मंडला, झाबुआ, छिंदवाड़ा, धार, शहडोल जैसे कांग्रेस प्रभाव क्षेत्रों, जहां लोकसभा में कांग्रेस को समर्थन मिला था, में निकाय चुनाव में भाजपा ने जीत दर्ज कर जनविश्वास अर्जित किया है।

मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने नगरीय निकाय चुनाव में मिली शानदार सफलता पर अनुसूचित जनजाति क्षेत्र की जनता और कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आजादी के बाद पहली बार भारतीय जनता पार्टी का परचम उन क्षेत्रों में फहराया गया है जहां हमारी पहुंच बाद में बनी। इस जीत ने हमें अपनी जवाबदेही का भी अहसास कराया है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार जन आकांक्षाओं पर खरी उतरेगी। श्री चौहान ने कहा कि यह भाजपा की विचारधारा और कार्यकर्ताओं की कर्मठता का फल है, प्रदेश सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन और उनसे आम आदमी को मिले सुखद अहसास का फल है। इन परिणामों ने साबित कर दिया है कि प्रदेश के सुदूर अंचल में रहने वाले वनवासी भी विकास की रोशनी से राहत और आगे बढ़ने का रास्ता पा रहे हैं। ■

(अनिल सौमित्र)

पुनः सरकार बनाने के लिए पार्टी कृतसंकल्प

'कहो दिल से, भाजपा फिर से' के नारे से गूंजा प्रदेश

– संवाददाता द्वारा

Hkkजपा हिमाचल प्रदेश कार्यकारिणी बैठक 22 जुलाई को मंडी में पूरे उत्साह एवं पुनः सरकार बनाने के दृढ़ संकल्प के साथ सम्पन्न हुई, जिसमें इस वर्ष के अंत में होने वाले विधानसभा चुनावों में पहले से अधिक जनादेश प्राप्त करने का सर्वसम्मत संकल्प लिया गया। यह संकल्प पार्टी के प्रदेश नेता एवं कार्यकर्ताओं ने केन्द्रिय नेतृत्व की उपस्थिति में लिया गया। मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि ऐसा पहली बार था कि भाजपा केन्द्रिय नेतृत्व प्रदेश कार्यकारिणी में इतनी बड़ी संख्या में उपस्थित था। राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री अरुण जेटली, राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री रामलाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शांता कुमार एवं श्री कलराज मिश्रा (प्रदेश भाजपा प्रभारी), राष्ट्रीय महामंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा तथा राष्ट्रीय मंत्री एवं प्रदेश सह-प्रभारी श्री श्याम जाजू बैठक में उपस्थित थे। इस कार्यकारिणी में लिया गया संकल्प तब और भी अधिक मुखर हो गया जब हजारों की संख्या में लोग कार्यकारिणी के समापन पर हुई रैली में मंडी में जमा हुए तथा उत्साहपूर्वक भाजपा कार्यकर्ताओं एवं नेताओं की आवाज में आवाज मिलाने लगे- पूरा वातावरण ''कहो दिल से, भाजपा फिर से'', ''कहो दिल से, धूमल फिर से'', के नारों से गुंजायमान होने लगा। अपार जनसमूह ने जहां एक ओर प्रदेश भाजपा सरकार की लोकप्रियता पर मुहर लगा दी वहीं दूसरी ओर प्रदेश भाजपा नेताओं-कार्यकर्ताओं को अपने संकल्प को साकार करने के लिए प्राणपण से जुट जाने को ऊर्जा भी दे रहा था।

बैठक का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन तथा मंडी जिला भाजपा अध्यक्ष श्री दिले राम के स्वागत भाषण से हुआ। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री सतपाल सत्ती ने कार्यकर्ताओं को एकजुट हो कमर-कस चुनाव की तैयारियों में जुट जाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि राज्य में शायद ही कोई घर बचा होगा जहां भाजपा ना पहुंची हो तथा जिसके किसी-ना-किसी सदस्य को सरकार की विकास-योजनाओं का लाभ ना मिला हो। उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता किसी भी घर का दरवाजा गर्व एवं आत्मविश्वास के साथ खटखटा सकते हैं।

जनता का विश्वास पुनः प्राप्त करें : कलराज

भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं प्रदेश प्रभारी श्री कलराज मिश्रा ने कहा कि जब हम सभी समर्पित हो पूरे मनोयोग से एकजुट होकर लगेंगे तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। हमारा ध्येय, मिशन, निष्ठा एवं कमल एक है इसलिए अवश्य ही हम प्रदेश में पुनः जनादेश प्राप्त करेंगे।

भाजपा राष्ट्रीय मंत्री एवं प्रदेश सह-प्रभारी श्री श्याम जाजू ने एक खुले सत्र का संचालन किया, जिसमें कार्यकर्ताओं की राय सुनी एवं भाजपा का विभिन्न मुद्दों पर पक्ष रखा। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि प्रदेश भाजपा सरकार ने अपना कार्य बखूबी से किया है और अब कार्यकर्ताओं को इसे पुनः जनादेश दिलाकर अपनी भूमिका निभानी है।

वादे से अधिक कार्य किया : धूमल

बैठक को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि सरकार की कल्याण योजनाओं का लाभ हर वर्ग तक पहुंचा है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने न केवल चुनाव घोषणापत्र के हर वादे को पूरा किया है बल्कि इसके आगे भी अनेक

कदम उठाये हैं। इससे जनता का विश्वास बढ़ा है। जनता अब यह समझने लगी है कि भाजपा सरकार जो कहती है वही करती है और जो करती है वह कहती है। उदाहरण के लिए प्रत्येक घर के लिए चार सीएफएल बल्ब चुनावी घोषणा में नहीं था फिर भी भाजपा सरकार ने यह कदम उठाया जिसमें 63 करोड़ रुपये खर्च तो हुए परन्तु जनता को अपने बिजली के बिलों में 110 करोड़ की बचत हुई। उन्होंने कहा कि केन्द्र की कांग्रेस सरकार के असहयोगात्मक रवैये के बावजूद प्रदेश ने हर क्षेत्र में जबरदस्त कीर्तिमान स्थापित किए। प्रदेश का प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से अधिक है। पिछले तीन वर्षों में सकल घरेलू उत्पाद लगभग दुगुना हो गया है। पिछले चार वर्षों में प्रदेश की भाजपा सरकार ने अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए जीते हैं। प्रो. धूमल ने कहा कि अब भाजपा कार्यकर्ताओं को अगले तीन-चार महीनों में केवल हर घर तक पहुंचना है।

एक सैनिक की तरह चुनाव लड़ें - रामलाल

अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में भाजपा राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री रामलाल ने कार्यकर्ताओं को हर घर तक पहुंचने का आह्वान किया तथा लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करने का आग्रह किया। पार्टी के जीत के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी जानी चाहिए, उन्होंने कहा। जीत या हार पार्टी की होती है किसी व्यक्ति की नहीं, यह हमें ध्यान में रखना चाहिए।

पार्टी कार्यकर्ताओं से आह्वान करते हुए श्री रामलाल ने कहा कि जो जहां है वहीं से पार्टी की जीत के लिए कार्य करे। कोई भी कार्यकर्ता खाली नहीं बैठना चाहिए, न ही काम के आवंटन का इंतजार करना चाहिए। सभी को एकजुट होकर पार्टी की जीत के लिए लग जाना चाहिए।

श्री रामलाल ने आगे कहा कि भाजपा सरकार द्वारा किए गये कल्याणकारी कार्य हर व्यक्ति के जुबान पर होना चाहिए तथा लोगों के मन में यह विश्वास पैदा किया जाना चाहिए कि पुन: सत्ता में आने पर भाजपा सरकार और भी अच्छा कार्य करेगी। अंत में उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता को एक सैनिक की तरह पूरे उत्साह, जोश एवं खरोश से पार्टी को पुन: जिताने में प्राणपण से जुट जाना चाहिए।

जीतने की उत्कट इच्छा आवश्यक - नड्डा

बैठक में दूसरे दिन अपने उद्बोधन में भाजपा राष्ट्रीय महामंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि कांग्रेस सरकार भ्रष्ट और नाकारा साबित हुई है। उन्होंने कहा कि केन्द्र की कांग्रेस सरकार ने 85 हजार करोड़ का खाद्यान्न सड़ने देना स्वीकार कर लिया परन्तु सर्वोच्च न्यायालय के कहने के बावजूद भूखे पेट बिस्तर पर जाने वाले गरीबों को बांटना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं में असंभव को संभव करने की क्षमता है। लेकिन हिमाचल में राह आसान है क्योंकि वहां 'संभव' को ही 'संभव' करना है। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं के अंदर किसी भी परिस्थिति में जीत दर्ज करने की उत्कट इच्छा प्रदेश में पुन: भाजपा सरकार को वापस लायेगी।

एकजुट हो हम जीतेंगे : शांता कुमार

भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शांता कुमार ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि पुन: भाजपा सरकार बनाने के लिए कार्यकर्ता एवं नेता एकजुट हैं। भाजपा सरकार के उसके लोक कल्याणकारी कार्य के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं को विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत सुनिश्चित करने के लिए कमर कस लेनी चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि इस वर्ष हिमाचल एवं गुजरात की जीत आने वाले दिनों में केन्द्र में भाजपा नीत राजग सरकार बनने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

यूपीए बिखर रहा है : जेटली

अपने समापन भाषण में राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली ने कहा कि संप्रग सरकार की तरह कार्य नहीं कर रही है बल्कि एक पब्लिक लिमिटेड कम्पनी की तरह कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री सीईओ हो गए हैं जो हमेशा बोर्ड के निर्देशक और बोर्ड के अध्यक्ष के निर्णय और आदेश का इंतजार करते रहते हैं।

आगे श्री जेटली ने कहा कि संप्रग तो आईसीयू में है जिसके लिए समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी वेंटिलेटर का काम करती है। यह टूट रही है। जिन राज्य से इसे शक्ति प्राप्त होती है जैसे प. बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश वहां यह अपना जनाधार खो रही है। यह सरकार कभी भी गिर सकती है। देश को किसी भी समय चुनाव में जाना पड़ सकता है।

उन्होंने कहा कि सरकार नीति सम्बन्धित निर्णय लेने में अक्षम है। इस सरकार के पास भ्रष्टाचार, अर्थव्यवस्था और आंतरिक सुरक्षा जैसे मुद्दों पर न कोई नीति है और न ही कोई दृष्टिकोण। भारत के उद्यमी सरकार में विश्वास खो रहे हैं। वे देश में निवेश करने की बजाय विदेश में निवेश करने पर ज्यादा सुरक्षित महसूस कर रहे हैं। देश में जो स्थिति है उससे साफ झलकता है कि तीसरा मोर्चा जैसा विचार भी अपनी प्रासंगिकता खो चुका है। जो राजनीतिक स्थिति उभर रही उसमें भाजपा ही एकमात्र विकल्प है।

हिमाचल प्रदेश पर बोलते हुए श्री जेटली ने कहा कि राज्य में प्रो. प्रेम कुमार धूमल की सरकार ने बेहतर कार्य किया है। इससे स्पष्ट है श्री धूमल की सरकार पुन: वापस आ रही है।

भाजपा की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए और किस प्रकार संप्रग सरकार महंगाई और भ्रष्टाचार को रोकने में अक्षम है, इस पर एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। बैठक का मंच संचालन राज्य के महामंत्री श्री राजीव बिंदल और श्री राम स्वरूप शर्मा ने की। बैठक के बाद सारे राष्ट्रीय और राज्यस्तरीय नेताओं ने मंडी में एक बड़ी रैली को संबोधित किया। ■

गुजरात में शिक्षा में सुधारों की सफल गाथा

गर कोई जानता है कि गुजरात बहुत उन्नतिशील तथा उच्च औद्योगिक प्रांत है। किंतु बहुत कम लोग जानते हैं कि गुजरात पन्द्रह प्रतिशत जनजातीय जनसंख्या रखता है। जनजातीय समाज शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है। गुजरात सरकार ने उनके लिए भी कई कल्याणकारी योजनाएं शुरू की हैं।शिक्षा के क्षेत्र में और साथ ही साथ नारी शिक्षा के क्षेत्र में गुजरात देश के अन्य राज्यों की अपेक्षा अच्छी स्थिति में है। भाग्यवश नई सरकार जो 2001 में सत्ता में आई उसने जल्दी ही इस दशक को मापा और इसमें नारी शिक्षा के संबंध में तथा प्राथमिक स्कूल की शिक्षा की गुणवत्ता के संबंध में कई उल्लेखनीय काम किए। इस विषय पर दो साधन व्यवहार में लाए गए। एक योजना थी जिसे कन्या केलवणी प्रवेशोत्सव और दूसरी गुणोत्सव प्रोग्राम जो विद्यालयों तथा शिक्षकों की गुणवत्ता को परखती है।करीब 1.8 लाख नई कक्षाएं प्राथमिक विद्यालयों में बनाई गई।

पानी पीने की व्यवस्था तथा कक्षाओं के लिए अलग शौचगृह बनाए गए तथा बिजली और कम्प्यूटर सब विद्यालयों को दिए गए। विद्या लक्ष्मी बोर्ड योजना बनाई गई ताकि लोग अपने बच्चों का विद्यालय में नाम लिखाएं और बच्चे विद्यालय आएं। पिछले 10 वर्षो में 1 लाख से ज्यादा शिक्षक प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्त किए गए जिनमें पारदर्शिता थी। इससे पहले कि हम इन नीतियों को समझ सकें, हमें उन नतीजों पर ध्यान देना चाहिए जो हमने देखे तथा जिनको महसूस किया–

कन्या केलवणी प्रवेशोत्सव

यह कार्यक्रम उन तथ्यों में से सामने आया कि सामाजिक स्थिति ही उस ग्रामीण जनसंख्या के लिए उत्तरदायी है जो अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते। प्रवेशोत्सव एक विशाल वार्षिक जागरण अभियान है जिसमें जून में हर वर्ष दाखिले के समय पूरा सरकारी तंत्र प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय और गांव में जाता है। यह कार्यक्रम 2003 में आरंभ हुआ था और आज तक चल रहा है। लोगों को कन्या शिक्षा का महत्व बताना। पहली कक्षा में 100 प्रतिशत दाखिला पूरा करना। स्कूल छोड़कर जाने वाले विद्यार्थियों में कमी करना, खास तौर से कन्याओं को इस बारे में बताना कि स्कूल में रहने का कितना महत्व है। नौकरशाही को शिक्षा की समस्याओं की प्रथम जानकारी देना, जो गांवों और शहरों के क्षेत्रों में पनपती हैं। गांव की शिक्षा की गुणवत्ता, दिन का खाना, शिक्षकों की उदासीनता, शिक्षा की संरचना की प्रथम सूचना को जानना।शिक्षकों को चेतना देना कि जो बड़े अधिकारी हर साल स्कूल में आते हैं, और इस तरह उन्हें यह अवसर प्रदान करते हैं, जो वे दिखा सकते हैं, कोई अच्छा काम जो उन्होंने किया हो। शिक्षा का मूल्यांकन खासतौर से कन्याओं की शिक्षा का मूल्यांकन, जबकि 40 प्रतिशत से ज्यादा पिछले दशक के ग्राफ यह दिखाते हैं कि कन्याओं ने शिक्षा के क्षेत्र में काफी कार्य किया है।

गुणोत्सव कार्यक्रम

गुणोत्सव ऐसा कार्यक्रम है जिसमें हर प्राथमिक विद्यालय का वार्षिक मूल्यांकन और साथ ही शिक्षा का भी मूल्यांकन होता है। इसमें जो तरीका अपनाया जाता है वह अद्‌भुत है। यह स्कूल द्वारा स्वयं गुण ग्राहिता जो विद्यार्थी की परीक्षा के आधार पर जो शिक्षक लेते हैं और जो विभागीय सरकारी कार्यालयों द्वारा भी निर्धारित होती है।

गुणोत्सव के उद्देश्य

सरकारी प्राथमिक जिलों में शिक्षा की गुणवत्ता पर दृष्टि डालना। शिक्षकों, शैक्षणिक अधिकारियों और समाज को शिक्षा की आवश्यकता के लिए उद्‌बोधन करता है। हर वर्ष विद्यार्थियों को सीखने के धरातल को नापना, यदि कोई उन्नति हो रही हो। शिक्षकों का उत्तरदायित्व निर्धारण कर स्कूल जहां वे पढ़ा रहे हैं या व्यक्तिगत रूप से हैं, स्कूल का स्तर निर्धारित करना। उन शिक्षकों को गुणोत्सव के अवसर पर अंक प्राप्त हुए हैं, उन्हें इनाम देना या दंड देना।

गुणोत्सव का परिणाम

यह कार्यक्रम 2009 में पहली बार किया गया और फिर 2010 और 2011 में इसकी पूर्णाहुति की गई। इन दो सालों में पढ़ाने का स्तर देखने लायक रहा। 2010 में जो स्कूल 10 में से 6 नंबर लाए वे 26.22 से 43.19 प्रतिशत तक बढ़ गए। ■

प्रादेशिक समाचार

हिमाचल

केन्द्र की यूपीए सरकार ने देश का सत्यानाश किया : नितिन गडकरी

केन्द्र की यूपीए सरकार ने देश का सत्यानाश किया है, देश में महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार चरम तक पहुंच चुका है। उक्त शब्द 8 जुलाई को कांगड़ा में आयोजित की गई राज्य स्तरीय रैली को संबोधित करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी ने कहे।

उन्होंने कहा कि भारत में विदेशी निवेश बन्द हो चुका है। पूरा विश्व भारत और चीन के विकास से प्रभावित था, परन्तु वर्तमान में भारत चीन से पिछड़ रहा है। चीन भारत को चारों ओर से घेर रहा है, परन्तु देश के नेता कुम्भकर्णी नींद सोये हुए हैं और भ्रष्टाचार करने में जुटे हुए हैं। श्री गडकरी ने कहा कि देश धनवान है, परन्तु देश की जनता गरीब है। इसका मुख्य कारण कांग्रेस की नकारात्मक आर्थिक नीतियां हैं।

उन्होंने आगे कहा कि हिमाचल में कांग्रेस परिवर्तन की बात कर रही है। उन्होंने कांग्रेस से सवाल किया कि वे देश व प्रदेश की जनता को बताये कि असलियत में परिवर्तन की आवश्यकता हिमाचल में है या दिल्ली में है। वर्तमान यूपीए सरकार के कार्यकाल में महंगाई चरम पर है और 18 बार तेल के दामों में बढ़ोतरी की गई, 1.76 लाख करोड़ रुपए का 2 जी घोटाला भी इसी सरकार की देन है। उन्होंने बताया कि विगत वर्ष 58हजार करोड़ का अनाज सरकार की उदासीनता के चलते सड़ गया था, तथा इस बार 85 हजार करोड़ रुपए तक का अनाज सड़ने का अर्थशास्त्रियों का अनुमान है।

उन्होंने कहा कि वाजपेयी सरकार के कार्यकाल में प्रतिदिन 40 किमी राष्ट्रीय उच्च मार्ग का निर्माण हो रहा था, परन्तु वर्तमान सरकार के कार्यकाल में 2 किमी भी सड़क का निर्माण नहीं हो रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने देश की जनता से वायदा किया था कि जीडीपी की दर को 12 प्रतिशत तक ले जाएंगे परन्तु वे इसमें नाकाम रहे और जीडीपी की दर मात्र 5 प्रतिशत तक रह गई। उन्होंने कहा कि भाजपा आज भी विदेशी बैंकों में जमा काला धन वापस लाने पर अडिग है और सत्ता में आते ही इस धन को वापस लाकर देश के विकास में खर्च किया जाएगा। जिस दिन काले धन वालों की सूची सार्वजनिक की जाएगी, उस दिन कांग्रेस के नेताओं का मुंह काला हो जाएगा।

उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री शांता कुमार व मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल के हिमाचल के विकास में दिए योगदान की प्रशंसा की। धूमल सरकार ने जिस प्रकार से प्रदेश को करीब 67 पुरस्कार विभिन्न क्षेत्रों में दिलाए हैं, यह प्रदेश के विकास का उदाहरण ही नहीं, बल्कि स्वाभिमान में भी मील पत्थर है। शांता कुमार ने यूएनओ में विदेशी बैंकों में जमा धन को वापस लाने के लिए मांग उठाई। केंद्र सरकार इस धन को लाना तो दूर, लोगों के नाम को उजागर करने में भी परहेज कर रही है।

रैली को मुख्यमंत्री श्री प्रेम कुमार धूमल, भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शांता कुमार और भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनुराग ठाकुर ने भी संबोधित किया।

दिल्ली

जम्मू कश्मीर पर वार्ताकारों की रिपोर्ट पूरी तरह अस्वीकार : सुषमा स्वराज

जम्मू कश्मीर पर वार्ताकारों की रिपोर्ट को अस्वीकार करते हुए भाजपा ने कहा कि यह संसद के उस प्रस्ताव के खिलाफ है जिसमें पाक अधिकृत कश्मीर सहित पूरे राज्य को भारत का अभिन्न अंग घोषित किया गया है।

लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने 16 जुलाई को नई दिल्ली स्थित जंतर मंतर पर 'जम्मू कश्मीर पीपुल्स फोरम' की ओर से आयोजित धरने में कहा कि वार्ताकारों की रिपोर्ट की भाषा, अलगावादियों की भाषा है। यह आतंकवादियों के मानवाधिकारों के उल्लंघन की बात करती है लेकिन आतंकवाद से शिकार लोगों की व्यथा के बारे में चुप है।

उन्होंने कहा कि रिपोर्ट में पाक कब्जे वाले कश्मीर को 'पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर' की जगह 'पाक प्रशासन वाले कश्मीर' कहा गया है जैसा की पड़ोसी देश के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ कहा करते थे। भाजपा नेता ने कहा कि रिपोर्ट में कश्मीर के एकीकरण की बजाए 'स्वायत्ता', 'स्व:शासन' और 'स्वतंत्रता' जैसे शब्दों का प्रयोग करके समय को पीछे ले जाया गया है।

वार्ताकारों की रिपोर्ट में की गई सिफारिशों को उन्होंने संविधान विरोधी बताते हुए यह कह कर पूरी तरह खारिज कर दिया कि इसमें अलगाववादियों के सुर में सुर मिलाया गया है। धरने के बाद रिपोर्ट की प्रतियां जलाई गईं। धरने में भाजपा के वरिष्ठ नेताओं में राष्ट्रीय महामंत्री श्री विजय गोयल और वरिष्ठ पार्टी नेता डॉ. जगदीश मुखी आदि भी शामिल थे।

इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ नेता श्री राम माधव ने कहा कि यह रिपोर्ट 1947 में जम्मू कश्मीर के भारत में

एकीकरण के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि इस रिपोर्ट में केवल कश्मीर घाटी के लोगों की भावना को समाहित किया गया है।

श्री माधव ने कहा कि वार्ताकारों की रिपोर्ट में ऐसे लोगों की आवाज को वजन दिया गया है जो हमारे संविधान का सम्मान नहीं करते हैं। लेकिन इसमें शरणार्थियों का जीवन जी रहे कश्मीरी पंडितों की आवाज को जगह नहीं दी गई है जिन्हें उनकी भूमि से उजाड़ दिया गया है।

जम्मू-कश्मीर

भूमि पूजन के साथ हाईटेक भाजपा मुख्यालय का कार्य शुरू

आधुनिक सुविधाओं से लैस प्रदेश भाजपा का नया मुख्यालय बनाने का अभियान 6 जुलाई को भूमि पूजन के साथ शुरू हुआ। राज्यसभा में विपक्ष के नेता व पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री श्री अरुण जेटली ने सुबह दस बजे भूमि पूजन के बाद नए भवन का नींव पत्थर रखा। त्रिकुटानगर के सेक्टर तीन में खरीदी गई भूमि पर बनवाया जा रहा भवन एक विधान, एक निशान, एक प्रधान की मांग को लेकर बलिदान देने वाले श्यामा प्रसाद मुखर्जी को समर्पित होगा। भूमि पूजन में संगठन महामंत्री श्री राम लाल, राष्ट्रीय महासचिव श्री जेपी नड्डा, राज्य प्रभारी डॉ. जगदीश मुखी, प्रदेश अध्यक्ष श्री शमशेर सिंह मन्हास सह प्रभारी श्री आरपी सिंह, डॉ. अनिल जैन के साथ प्रदेश भाजपा के सभी वरिष्ठ नेता उपस्थित थे। श्री जेटली ने कहा कि भवन निर्माण में देरी नहीं होने चाहिए। उत्तर भारत में अपनी तरह का पहला हाईटेक मुख्यालय होगा। श्री जेटली ने कहा कि पूरे प्रयास किए जाएं कि अगली बार छह जुलाई को श्यामा प्रसाद के जन्मदिवस पर कार्यक्रम इसी भवन में हो। भवन के लिए भूमि तीन वर्ष पहले खरीदी गई थी। उस समय श्री अशोक खजूरिया प्रदेश अध्यक्ष थे।

बिहार

राज्य की आर्थिक वृद्धि 16.71 प्रतिशत पर पहुंची: सुशील मोदी

बिहार के उपमुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि नवीनतम आंकड़े के मुताबिक वर्ष 2011-12 में बिहार की आर्थिक वृद्धि दर 16.71 प्रतिशत रही है जो पिछले पांच साल में सर्वाधिक है। प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ी। पटना स्थित उपमुख्यमंत्री आवास पर 17 जुलाई 2012 को आयोजित जनता दरबार के बाद संवाददाताओं को संबोधित करते हुए श्री मोदी ने कहा कि वित्तीय वर्ष पूरा होने के बाद जून महीने में किए गए त्वरित आकलन के मुताबिक वर्ष 2011-12 में बिहार की विकास दर 16.71 प्रतिशत दर्ज की गई है जो कि पिछले पांच साल का उच्चतम स्तर है। मौजूदा सरकार के सत्ता में आने के बाद पिछले छह साल में प्रति व्यक्ति आय भी 80 प्रतिशत बढ़कर 15,470 रुपये तक पहुंच गई। उन्होंने कहा कि वर्ष 2011-12 में बिहार में खाद्यान्न का रिकार्ड उत्पादन हुआ। वर्ष 2011-12 में बिहार में 166.69 लाख टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ है जबकि 2010-11 में 103.47 लाख टन खाद्यान्न उत्पादन हुआ था। मोदी ने कहा कि कृषि क्षेत्र में रिकार्ड उत्पादन वृद्धि की बदौलत ही वर्ष 2011-12 में बिहार की आर्थिक विकास दर 16.71 प्रतिशत पहुंची है।

राज्य का वित्त मंत्रालय भी संभाल रहे श्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि वर्ष 1981-82 से लेकर 1990-91 तक बिहार की आर्थिक वृद्धि औसतन 4.9 प्रतिशत रही और 1991-92 से 1995-96 तक इस प्रदेश की विकास दर शून्य रही थी। वर्ष 1995-96 से 2001-02 तक यह वृद्धि औसतन 3.8 प्रतिशत रही। उन्होंने कहा 'बिहार की विकास दर में इससे पहले जो उतार-चढाव ज्यादा रहा उसे इस सरकार ने कम किया है और हमारा प्रयास होगा कि 12वीं पंचवर्षीय योजना में बिहार की जो विकास दर है वह 13 प्रतिशत हासिल हो सके। राज्य सरकार की पूरी तैयारी इसी दिशा में है।'

झारखंड

दो लाख नये सदस्य बनाने का लक्ष्य : डॉ. गोस्वामी

इस साल भाजपा में दो लाख नये सदस्यों को जोड़ा जायेगा। इसके लिए सभी कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों को दिशा-निर्देश जारी कर दिये गये है। यह बात भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डा. दिनेशानंद गोस्वामी ने मऊभंडार (घाटशिला) में 21 जुलाई को आयोजित भाजपा के सदस्यता अभियान शिविर में कही। डॉ. गोस्वामी कार्यकर्ताओं के उत्साहवर्द्धन के लिए विशेष तौर पर घाटशिला पहुंचे थे।

डॉ. गोस्वामी ने केन्द्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि देश में कांग्रेस नीत सरकार जन विरोधी सरकार है। इसका पर्दाफाश भाजपा सड़क पर करने वाली है। झारखंड की चर्चा करते हुए डॉ. गोस्वामी ने कहा कि 12 वर्ष पूर्व राज्य का गठन भाजपा के प्रयत्न से हुआ था। इन वर्षो में राज्य का जो भी विकास हुआ वह भाजपा की ही देन है। अन्य दल के लोगों ने तो राज्य को लूटने का ही प्रयास किया। डॉ. गोस्वामी ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी द्वारा राष्ट्रव्यापी अभियान के तहत सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है। राज्य में पहले से छह लाख सदस्य है इस वर्ष दो लाख सदस्य बनाने का लक्ष्य पार्टी द्वारा रखा गया है। जिसमें अधिक से अधिक युवा व महिलाओं को संगठन से जोड़ना है। ■

विश्वविख्यात पहलवान, अभिनेता व पूर्व सांसद दारा सिंह नहीं रहे

कुश्ती की दुनिया में अमिट पहचान बनाने वाले और टीवी धारावाहिक 'रामायण' में हनुमान की कालजयी भूमिका निभाने वाले पूर्व सांसद दारा सिंह नहीं रहे। गत 12 जुलाई 2012 को उनका देहांत हो गया।

राष्ट्रमंडल कुश्ती चौंपियन दारा सिंह ने पेशेवर कुश्ती के क्षेत्र में काफी नाम कमाया था। दारा सिंह की इन शानदार उपलब्धियों के लिये उन्हें 'रुस्तम ए पंजाब' और 'रुस्तम ए हिंद' से सम्मानित किया गया था। कुश्ती की दुनिया को अलविदा कहने के बाद दारा सिंह ने अभिनय की दुनिया में झंडा गाड़ा। दारा सिंह ने रामानंद सागर के टीवी सीरियल रामायण' में हनुमान की कालजयी भूमिका निभाई थी और वह घर घर में लोकप्रिय हो गए थे। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने अपने शोक संदेश में कहा कि उनके निधन से देश को अपूरणीय क्षति हुई है और उनकी कमी हमेशा खलेगी। भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने अपने शोक संदेश में कहा, ''देश ने अपने रत्नों में से एक को खो दिया है। सहृदय दारा सिंह के निधन से जो रिक्तता आयी है उसे भरा नहीं जा सकता है।'' कार्य के प्रति दारा सिंह के समर्पण की सराहना करते हुए श्री आडवाणी ने कहा कि उन्होंने अभिनय और कुश्ती के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ी है। ■

नमन्...

बाल गंगाधर तिलक

'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा' इस नारे के प्रणेता बाल गंगाधर तिलक (जन्म : 23 जुलाई, 1856 रत्नागिरी, महाराष्ट्र - मृत्यु: 1 अगस्त, 1920 मुंबई) विद्वान, गणितज्ञ, दार्शनिक और प्रखर राष्ट्रवादी व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता की नींव रखने में सहायता की। उनकी महान कृति 'भगवद्गीता - रहस्य' सुप्रसिद्ध है।

खुदीराम बोस

खुदीराम बोस (जन्म: 3 दिसंबर 1889 हबीबपुर, मिदनापुर, बंगाल - मृत्यु: 11 अगस्त, 1908 मुजफ्फरपुर, बिहार) मात्र 19 साल की उम्र में देश के लिए फाँसी के फंदे पर झूल गए। खुदीराम बोस तथा उसके साथी ने क्रांतिकारियों को तंग करनेवाले चीफ प्रेंसीडेसी मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की बग्घी पर बम फेंक दिया। लेकिन उस बग्घी में किंग्सफोर्ड नहीं था। मिसेज कैनेडी और उसकी बेटी मारी गई। 11 अगस्त, 1908 को इस वीर क्रांतिकारी को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। खुदीराम बोस को भारत की स्वतंत्रता के लिए संगठित क्रांतिकारी आंदोलन का प्रथम शहीद माना जाता है।

श्रीअरबिंदो

श्री अरबिंदो (जन्म: 15 अगस्त, 1872, कोलकाता - मृत्यु: 5 दिसम्बर, 1950, पाण्डिचेरी) कवि, दार्शनिक, क्रांतिकारी व महान योगी थे। उन्होंने भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने और राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिए ऐतिहासिक कार्य किया। उन्होंने बंगाल में 'क्रांतिकारी दल' का संगठन किया। अरबिंदो घोष ने राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने तथा अंग्रेजों का विरोध प्रदर्शित करने के लिए पत्र-पत्रिकाओं में विचारोत्तेजक और प्रभावशाली लेख लिखे।

कुशाभाऊ ठाकरे

कुशाभाऊ ठाकरे (जन्म: 15 अगस्त, 1922, धार, म.प्र. - मृत्यु: 28 दिसम्बर, 2003, नई दिल्ली) कुशल संगठक और महान राजनेता थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक प.पू गुरूजी ने जिन कुछ प्रचारकों को भारतीय जनसंघ को सशक्त बनाने का दायित्व सौंपा था, कुशाभाऊ उनमें से एक थे। कुशाभाऊ म.प्र. जनसंघ के प्रदेश संगठन मंत्री व राष्ट्रीय मंत्री रहे। 1977 में जनता पार्टी, म.प्र. के प्रदेशाध्यक्ष बने। आपातकाल के विरोध में 19 महीने जेल में रहे। खंडवा से लोकसभा सदस्य चुने गए। भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बने और बाद में उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष (1998-2000) पद को सुशोभित किया। ■